मूल्य ₹ 75

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

मई – जून, 2018

डेरी उद्यमिता की नई राह

स्वच्छ दूध उत्पादन

गोधन का अर्थशास्त्र

www.indairyasso.org

Visit
www.indairyasso.org

for IDA On-line Membership/Subscription

STAY ON-LINE WITH US

Advantage Members

- Access on-line to view and update membership profile*
- Renew your annual membership on-line
- Those willing to become member of IDA can register on-line

How to Log on?

Visit www.indairyasso.org

Click on Membership On-line Enter ID and Password#

Advantage Subscribers

Subscribe on-line:

- Indian Dairyman
- Indian Journal of Dairy Science
- Monograph on Khoa, Paneer, Chhana and Whey

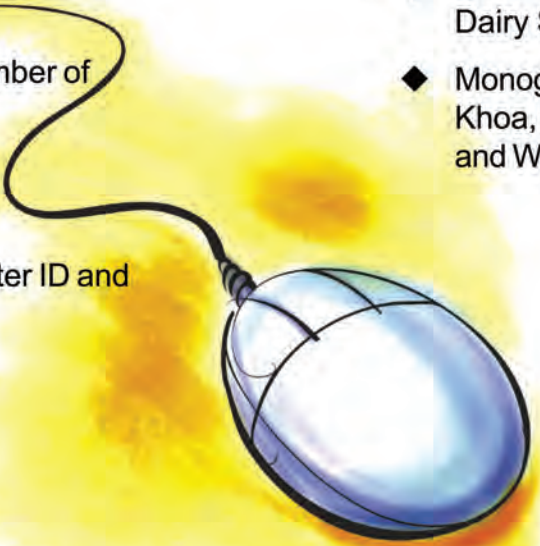

#
Your ID is:
Your Membership No
Your Password is your Zone Code+
State Code+DD+MM of DOB
(e.g. If Zone Code is NZ, State Code is DL and DOB is 01-11-1970, then pwd will be NZDL0111

**** Kindly ensure that your profile remains updated in all respects so that we can provide you better services***

For registration of new individual membership, institutional membership/renewals/ updation, forms can also be downloaded from the website and submitted to the concerned zonal offices as per detail mentioned therein.

Ms. Arti Talwar
Asst. Secretary, Indian Dairy Association
IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi
Phones: 91-11-26182454 / 26179781 Fax: 26174719
Email: admin@indairyasso.org / idahq@rediffmail.com

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 2 अंक : 3 मई–जून 2018

संपादन सलाहकार समिति

अध्यक्ष

डॉ. जी.एस. राजौरिया
अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

सदस्य

डॉ. अनिल कु. श्रीवास्तव
अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल, नई दिल्ली

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. बी.एस. बैनिवाल
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, एचएयू कैम्पस, हिसार

डॉ. अनूप कालरा
कार्यकारी निदेशक
आयुर्वेट लिमिटेड, गाजियाबाद

श्री सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना

श्री किरीट मेहता
भारत डेरी, कोल्हापुर

डॉ. ओमवीर सिंह
प्रबंध निदेशक
एनडीडीबी डेरी सर्विसेस लिमिटेड, नई दिल्ली

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रधन वैज्ञानिक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रकाशक
श्री नरेश कुमार भनोट

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क
इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ 4

राह
आजीविका, विकास और रोजगार का नया साधन डेरी उद्यमिता 8
डॉ. आर.एस. खन्ना

सावधानी
स्वच्छ दूध उत्पादन कैसे करें ? 12
बलबीर सिंह बैनिवाल एवं विपुल जागलान

रोकथाम
पशुओं को संक्रमण रोगों से बचाएं, टीकाकरण अवश्य कराएं 15
डा. राजेन्द्र सिंह

रिपोर्ट
आईडीए के अध्यक्ष ने डेरी में कौशल विकास पर जोर दिया 18
संपादकीय डेस्क

रिपोर्ट
एनडीआरआई में 16वें दीक्षांत समारोह का आयोजन 22
डॉ. राजन शर्मा

योजना
डेरी विकास के राष्ट्रीय कार्यक्रम का लाभ उठाएं 23
सीमा चोपड़ा

प्रश्नोत्तरी
दुधारू पशुओं को खुरपका – मुंहपका रोग से बचाएं 28
डॉ मनोज कुमार

परंपरा
गोधन का अर्थशास्त्र 32
श्री चेथमल जी गोयनका

सफलता गाथा
गृहिणी से डेरी उद्यमी बनीं नीतू यादव 35
आईडीए, नॉर्थ ज़ोन

प्रबंधन
दुधारू पशु मद में ना आएं तो क्या करें 37
नितिन रहेजा एवं निशान्त कुमार

डिस्क्लेमर
लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य
एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः डॉ. जी.एस. राजौरिया

उपाध्यक्षः डॉ. सतीश कुलकर्णी और श्री ए.के.खोसला

सदस्य

चयनितः श्री आर.एस. सोढ़ी, डॉ. जी.आर.पाटिल, डॉ. राजा रत्तिनम, डॉ. के.एस. रामचन्द्र, डॉ. जे.वी. पारिख, डॉ. एस.के. कनौजिया, श्री सुधीर कुमार सिंह, श्री किरीट के. मेहता, श्री राजेश सुब्रमनियन, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचन्द्र चौधरी और श्री टी.के. मुखोपाध्याय **नामित सदस्यः** श्री अरूण नरके, श्री एस.एस.मान, डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, श्री सी.पी. चार्ल्स, श्री अरूण पाटिल, श्री मिहिर कुमार सिंह, डॉ. आर.आर.बी. सिंह और श्री संग्राम आर. चौधरी

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्षः डॉ. जी.एस. राजौरिया, **सदस्यः** डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव, डॉ. आर.एम. आचार्य, डॉ. किरण सिंह, डॉ आर.आर.बी. सिंह, डॉ. सतीश कुलकर्णी, श्री अजय कुमार खोसला, डॉ. एस.के. कनौजिया, डॉ. ए.के. मिश्रा, प्रो. (डॉ.) आर.एन. कोहली, डॉ. आर. राजेंद्र कुमार, डॉ. जे.बी. प्रजापति, डॉ. प्रमथेश आर. पटेल, **सम्पादक, आईजेडीएसः** डॉ. बिमलेश मान, **सम्पादक, इंडियन डेरीमैन** डॉ. कौशिक खमरूई, **सम्पादक, दुग्ध सरिताः** डॉ. जगदीप सक्सेना

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, फैक्स – 91–11–26174719, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

क्षेत्रीय शाखाएं एवं चैप्टर्स

दक्षिणी क्षेत्रः श्री सी.पी. चार्ल्स, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** श्री अरूण पाटिल, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः arunpatilida@gmail.com **उत्तरी क्षेत्रः** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, अध्यक्ष, द्वारा एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, के सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता– 700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** डॉ. के. रत्तिनम, अध्यक्ष; द्वारा एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणद कृषि विश्वविद्यालय, आणद– 388110, गुजरात, ई–मेलः guptahk@rediffmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. पी. आई. गीवर्गीज़, अध्यक्ष, प्रोफेसर एवं प्रमुख तथा पूर्व डीन, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मन्नुथि, त्रिसूर–680651, फोन–0487–2372861, फैक्स–00487–2372855, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** श्री ललित कुमार कौशिक, अध्यक्ष, द्वारा जयपुर डेयरी, गांधीनगर रेलवे स्टेशन के पास, जयपुर– 302015, टेलीफोन नं. 9549653400, फैक्स 0141–2711075, ई–मेलः idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** श्री इन्द्रजीत सिंह, अध्यक्ष; द्वारा निदेशक, डेरी विकास विभाग, पंजब लाइवस्टॉक कॉम्पलैक्स, चौथी मंजिल, आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ के निकट, सेक्टर–68, मोहाली, फोन : 0172–5027285, ई–मेलः director_dairy@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री एस.के. सिंह, अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, पटना डेयरी कार्यक्रम, वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, फीडर बैलेन्सिंग डेयरी कॉम्प्लेक्स, फुलवारीशरीफ, पटना–01505. ई–मेलः sudhirpdp@yahoo.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** श्री ए.के. शर्मा, अध्यक्ष, (नामित); द्वारा निदेशक, एनडीआरआई, करनाल, 132001. टेलीफोनः 0184–2259002, 2252800. ई–मेलः dir@ndri.res.in **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** डॉ. सी. नरेश कुमार, अध्यक्ष, को/ओ. प्रोफेसर एवं प्रमुख (सेवानिवृत्त), डेयरी विज्ञान विभाग, मद्रास पशुचिकित्सा कॉलेज, चेन्नई–600 007. **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** श्री के. भास्कर रेड्डी, अध्यक्ष; प्रबंध निदेशक, क्रीमलाइन डेयरी प्रॉडक्ट्स लिमिटेड, 6–3–1238/बी/21, आसिफ एवेन्यू, राज भवन रोड, सोमाजीगुड़ा, हैदराबाद–500 082. फोनः 040–23412323, फैक्सः 040–23323353. **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष, प्रोफेसर, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221005, फोनः 0542–6701774/2368583, फैक्सः 0542–2368009, ई–मेलः dcrai.bhu@gmail.com

DeLaval

फीडटेकTM साईलेज – एफ 400

अच्छी साईलेज बनाने और बेहतर स्टोअरेज के लिए

साईलेज बनाने के लिए जैविक मिश्रण

- साईलेज मे फंगस् कि रोकथाम
- साईलेज की गुणवत्ता बढाने मे सहायता
- इस्तमाल करने के लिए सुरक्षित (यह एसिड नहीं है)
- मात्रा: 1 ग्राम प्रति 1 टन साईलेज

DeLaval Private Limited
A-3, Abhimanshree Society,
Pashan Road, Pune - 411008, India.
Tel. +91-20-6721 8200 | Fax +91-20-6721 8222
Email: marketing.india@delaval.com
Website: www.delaval.in

100 Years of Milking Excellence 1917 - 2017

Celebrating journey of 25 years in India

अध्यक्ष की बात, आपके साथ

"घी हमारे जीवन के लिए अमृत स्वरूप और ऊर्जा का अपार स्रोत है। बताया गया है कि अधिक वसा वाले डेरी उत्पादों के सेवन से टाइप-2 डायबिटीज (मधुमेह) के प्रकोप की संभावना कम हो जाती है।"

घी से परहेज़ ना करें !

प्रिय पाठकों,

भारत के प्राचीन और प्रसिद्ध वेदों, उपनिषदों और संहिताओं में हमारे जीवन और स्वास्थ्य में दूध और दूध उत्पादों के महत्व को भली–भांति बताया गया है। अपने औषधीय गुणों और चिकित्सीय विशेषताओं के कारण दूध उत्पादों को भारतीय खान–पान की परंपराओं में प्राचीन काल से ही विशेष स्थान प्राप्त है। घी तो हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है और इसे मानव शरीर को शक्ति देने वाले स्वास्थ्यवर्धक पदार्थ के रूप में मान्यता दी गयी। अनेक आयुर्वेदिक औषधियों को बनाने में भी इसका प्रचुर उपयोग होता है। अनेक धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक रीति–रिवाजों में भी घी के उपयोग की एक अनिवार्य और सुदीर्घ परंपरा रही है।

आपा–धापी भरी आधुनिक जीवन शैली में हम तनाव से घिर गये, अनेक हानिकारक इतर प्रभावों वाली रासायनिक दवाइयों का इस्तेमाल होने लगा और हमारे खान–पान में स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले अनेक खाद्य पदार्थ शामिल हो गये, जो पोषण की दृष्टि से नितांत खोखले थे। धीरे–धीरे अंग्रेजी दवाइयों के प्रभाव ने घी की प्राकृतिक विशेषताओं को जनमानस में धूमिल करने का काम किया। हम यह भूलने लगे कि घी हमारे शरीर, मस्तिष्क और आत्मा को शक्ति देकर समृद्ध बनाता है।

घी हमारे जीवन के लिए अमृत स्वरूप और ऊर्जा का अपार स्रोत है। बताया गया है कि अधिक वसा वाले डेरी उत्पादों के सेवन से टाइप–2 डायबिटीज (मधुमेह) के प्रकोप की संभावना कम हो जाती है, क्योंकि इसमें संतृप्त वसीय अम्ल (सी4 से सी14) प्रचुर मात्रा में उपस्थित रहते हैं। वसा में घुलनशील विटामिन देह में इंसुलिन के स्राव को सीधे प्रभावित करते हैं। विटामिन–डी, ग्लूकोस के स्थानांतरण के लिए इंसुलिन की क्रिया को बढ़ा देता है। दूध की प्रति ग्राम वसा में 4–7 मिलीग्राम कॉन्जुगेटेड लिनोलिक अम्ल (सीएलए) उपस्थित रहता है, जो कैंसर के जोखिम को कम करता है। हमारे शरीर को कुछ ऐसे आवश्यक वसीय अम्लों की आवश्यकता होती है, जो शरीर में प्राकृतिक रूप से नहीं बनते। लिनोलिक अम्ल के अलावा अरैकिडोनिक, लिनोलिनिक और ओमेगा–3 पॉली अनसैचुरेटेड वसीय अम्ल (प्यूफा के संक्षिप्त नाम से लोकप्रिय) भी हमें दूध से प्राप्त होते हैं। 'प्यूफा' के नियमित सेवन से हृदय तथा संबंधित रोगों की संभावना कम हो जाती है, क्योंकि यह

धमनियों में रक्त के बहाव को सुधारता है और धमनियों की कठोरता को भी कम करता है। दूध की वसा में कुछ एंटीऑक्सीडेंट जैसे बीटा–कैरोटीन, अल्फा–टोकोफेरोल और फॉस्फोलिपिड्स भी मिलते हैं, जो बुढ़ापे की प्रक्रिया को धीमी कर देते हैं और रतौंधी से भी बचाते हैं।

परंतु पिछली शताब्दी के दौरान अनेक विशेषताओं वाले उपयोगी दूध उत्पादों जैसे फुल क्रीम दूध, क्रीम, मक्खन और घी को दुनिया भर में कोलेस्टेरॉल का हौवा खड़ा करके बदनाम किया गया। संपूर्ण विश्व में भूख, कुपोषण, संचारी रोगों और अब पर्यावरण प्रदूषकों के कारण होने वाली कुल मानव मौतों की संख्या हृदय रोगों, डायबिटीज और कैंसर की तुलना में अधिक होनी चाहिए।

लेकिन आम जनता को कोलेस्टेरॉल से भयभीत करना वर्तमान दौर का सबसे बड़ा चिकित्सीय घोटाला है। सन् 1970 में अमेरिका की पोषण संबंधी सलाहकार संस्थाओं ने बार–बार चेतावनी जारी की कि अधिक कोलेस्टेरॉल वाले खाद्य पदार्थों से परहेज करें, इनसे दूर रहें, क्योंकि इनसे धमनियों में रूकावट पैदा होती है और हृदय रोग उत्पन्न होते हैं। अब लगभग 45 वर्ष बाद अमेरिका की 'डायटरी गाइडलाइंस एडवाइजरी कमेटी' यह कहती है कि उसने डायटरी कोलेस्टेरॉल और सीरम कोलेस्टेरॉल के बीच कोई सीधा और सार्थक संबंध नहीं पाया है।

जब हम कोलेस्टेरॉल की अधिकता वाले खाद्य पदार्थों का सेवन करते हैं तो हमारा शरीर इसे कम बनाता है, लेकिन कमी की दशा में इसके उत्पादन में तेजी आ जाती है। शरीर में अधिकांश कोलेस्टेरॉल हमारे यकृत (लिवर) में बनता है। हमारा मस्तिष्क मुख्य रूप से कोलेस्टेरॉल से बना है और तंत्रिका कोशिकाओं के सुचारू रूप से कार्य करने के लिए इसकी उपस्थिति आवश्यक है। यही कोलेस्टेरॉल सभी स्टेरॉयड हार्मोनों के उत्पादन का आधार भी है, जिसमें इस्ट्रोजन, टेस्टोस्टेरोन और कॉर्टिकोस्टेरॉयड शामिल हैं।

यदि हमारे शरीर में अधिक कोलेस्टेरॉल है, तो इसका सीधा अर्थ है कि हमारा यकृत ठीक से काम कर रहा है, उसका स्वास्थ्य अच्छा है। हमारे शरीर को सभी दैनिक कार्यों को भली–भांति करने के लिए प्रतिदिन 950 मिलीग्राम कोलेस्टेरॉल की आवश्यकता होती है और यकृत इसका मुख्य उत्पादक है। अब विशेषज्ञ कहते हैं कि एलडीएल या एचडीएल जैसा कुछ नहीं है, जो हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। लेकिन फिर भी कुछ चिकित्सा विशेषज्ञों का एक वर्ग है जो कुछ विशेष स्वास्थ्य दशाओं, जैसे डायबिटीज में कोलेस्टेरॉल की अधिकता वाले आहार से परहेज रखने की सिफारिश करता है। कोलेस्टेरॉल के हानिकारक होने की सूचना या जानकारी इस हद तक हमारे दिमाग में रच–बस गयी है कि अनेक निर्माता कंपनियां अपने खाद्य पदार्थों पर 'कोलेस्टेरॉल नहीं', 'कम कोलेस्टेरॉल' या 'अल्प कोलेस्टेरॉल' जैसे लेबल लगाकर उनका विज्ञापन करती हैं। ऐसे समाचारों/लेखों को ऊंचा पारिश्रमिक देकर लिखवाया और प्रचारित किया जाता है। हाल में कोलेस्टेरॉल के प्रति आये सकारात्मक बदलाव को पोषण विज्ञान की प्रगति के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत का प्राचीन ज्ञान–विज्ञान, जिसमें घी को अमृत स्वरूप कहा गया था, आज सत्य सिद्ध हुआ है। भारतीय डेरी उद्योग को आम जनता के स्वास्थ्य और हित को देखते हुए अधिक वसा वाले डेरी उत्पादों की खपत को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए, इन्हें लाकप्रिय बनाना चाहिए।

घनश्यामसिंह राजौरिया

(घनश्याम सिंह राजौरिया)

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

अहमदाबाद जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)
अमृत फ्रेश प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
आयुर्वेट लिमिटेड (दिल्ली)
आरोहण डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, तंजावुर (तमिलनाडु)
बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)
बनासकांठा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)
बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)
बेलगांव जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसायटी संघ लिमिटेड, बेलगांव (कर्नाटक)
बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)
बिहार राज्य दुग्ध सहकारिता संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
बिमल इंडस्ट्रीज, यमुना नगर (हरियाणा)
बोवियन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)
ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
चंबल डेयरी उत्पाद, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
सीपी दुग्ध और खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
क्रीमी फूड्स लिमिटेड (दिल्ली)
डेयरी क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
डीएसएम न्यूट्रिशनल प्रोडक्ट्स, मुंबई (महाराष्ट्र)
डेनफोस इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)
देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद डीयूएसएस लिमिटेड, बेगूसराय (बिहार)
डोडला डेयरी लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
द्वारका मिल्क एंड मिल्क प्रोडक्ट्स लिमिटेड, नवी मुंबई (महाराष्ट्र)
इली लिली एशिया इंक, बेंगलुरु (कर्नाटक)
एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
फार्मगेट एग्रो मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
किसान प्रशिक्षण केन्द्र, डेयरी विकास, रांची (झारखंड)
खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)
फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)
फोंटेरा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
गरिमा मिल्क एंड फूड्स प्रोडक्ट्स लिमिटेड (दिल्ली)
गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)
जीईए वेस्टफालिया सेपरेटर (ई) प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
गांधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गांधीनगर (गुजरात)
गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)
गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आंणद (गुजरात)
जीआरबी डेयरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)
एचसीएल इन्फोसिस्टम्स लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)
हेटसन कृषि उत्पाद लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)
हिंदुस्तान इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)
आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)
इग्लू डेयरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
आईटीसी फूड्स, बेंगलुरू, (कर्नाटक)
भारतीय संभार एवं सामग्री प्रबंधन रेल संस्थान (दिल्ली)
जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)
कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
कस्तूरबा जैव–उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
करनाल दुग्ध उत्पाद लिमिटेड (दिल्ली)
करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)
ख़ैबर एग्रो फार्म्स प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)
खम्बेत कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)
क्वालिटी डेयरी इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली (दिल्ली)
कोलेनमेसे या ट्रेडफेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)
कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)
लार्सन एंड टूब्रो इन्फोटेक लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
मध्य प्रदेश राज्य सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, भोपाल (मध्य प्रदेश)
मालाबार क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कोझीकोड (केरल)
मालगंगा डेयरी फार्म, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)
एनसीडीएफआई, आंणद (गुजरात)
राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, आणंद (गुजरात)
भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, सोनीपत (हरियाणा)
नोवोजाइम्स दक्षिण एशिया प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)
नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ओराना इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)
पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)
पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)
पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)
परम डेयरी लिमिटेड (दिल्ली)
पराग दुग्ध खाद्य प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रादेशिक सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
प्रिया दुग्ध और दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
पब्लिक प्रोक्योरमेंट ग्रुप (दिल्ली)
प्रभात डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)

संस्थागत सदस्य

राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, सांगली (महाराष्ट्र)
राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)
एसआर थोराट दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
स्टर्लिंग एग्रो इंडस्ट्रीज लिमिटेड (दिल्ली)
सिनर्जी एग्रो–टेक प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)
सील्ड एयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
श्राइबर डायनामिक्स डेयरीज लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
सीरप (एसईआरएपी) इंडस्ट्रीज (दिल्ली)
श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)
श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
श्री राजेश्वरी डेयरी उत्पाद उद्योग प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
स्टर्न इन्ग्रेडिएन्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)
सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)
शिमोगा सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसाइटीज़ संघ लिमिटेड, शिमोगा (कर्नाटक)
टेट्रा पैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
द कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारी संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)
द पटियाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पटियाला (पंजाब)
द पंजाब राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, चंडीगढ़ (पंजाब)
द रोहतक सहकारी दुग्ध उत्पादक लिमिटेड, रोहतक (हरियाणा)
द रोपड़ जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, मोहाली (पंजाब)
द संगरूर जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (पंजाब)
उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)
उत्तर प्रदेश दीन दयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)
वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
विद्या डेयरी, आणंद (गुजरात)
विर्बक पशु स्वास्थ्य इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
ज्यूजर इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
आर.पी.एम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चेन्नई, (तमिलनाडु)

वार्षिक सदस्य

एबीटी उद्योग, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
एबॉट हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
अमृत खाद्य, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
भोपाल सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (माध्य प्रदेश)
बी.जी. चितले डेयरी, सांगली (महाराष्ट्र)
क्लोरोफिल टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बंगलौर
कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
क्रीमलाइन डेयरी उत्पाद लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
डीलावेल प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला
आईसीएल प्रबंधन एवं व्यापार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)
भारतीय इम्युनोलॉजिकल्स लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
इन्फीकोल्ड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आणंद (गुजरात)
जिंदल स्टेनलेस कॉर्पोरेट प्रबंधन सेवा प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
जम्मू व कश्मीर दुग्ध उत्पादक सहकारिता लिमिटेड
जेएमडी सोनिक इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, आणंद (गुजरात)
ख़ैबर एग्रो फार्म प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)
माही दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)
मैगनाम नेटलिंक प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)
मेसे म्यूनशेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)
मॉडर्न डेयरीज लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)
ऑटोकम्पू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (नई दिल्ली)
पीएमएस इंजीनियर्स (इंटरनेशनल) सेवा (दिल्ली)
राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)
रिनैक इंडिया लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)
सह्याद्रि कृषि उत्पाद और डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)
संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)
शारदा डेयरी एवं खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर (छत्तीसगढ़)
साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (दिल्ली)
सीता राम गोकुल मिल्क्स केटीएम लिमिटेड, काठमांडू (नेपाल)
शेंदोंग बिहाई मशीनरी कंपनी लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)
एसपी मणि एंड मोहन डेयरी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (तमिलनाडु)
शिरीष पॉलीकेम प्राइवेट लिमिटेड, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
श्री एडीटिव्स (पी एंड एफ) लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
श्री ममता दुग्ध डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, जालोर (राजस्थान)
श्रीकृष्णा दुग्ध प्राइवेट लिमिटेड, हुबली (कर्नाटक)
श्रीचक्र दुग्ध उत्पाद एलएलपी (आंध्र प्रदेश)
सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
अंबाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (हरियाणा)
तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (केरल)
वर्ल्ड ऐनीमल प्रोटेक्शन, नई दिल्ली
क्लोरोफिल टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

राह

आजीविका, विकास और रोजगार का नया साधन

डेरी उद्यमिता

डॉ. आर.एस. खन्ना
चेयरमैन, क्वालिटी लिमिटेड
नई दिल्ली

देश में अनुमानतः लगभग 45 प्रतिशत देशज गाएं, 35 प्रतिशत भैंस और 10 प्रतिशत संकर गाएं हैं। दुग्ध उत्पादन में वृद्धि की दृष्टि से हमेशा देशज गायों पर दोषारोपण होता रहा है, मगर इधर संकर गायों विशेषकर होलस्टीन फ्रीजियन नस्लों में भी गिरावट का रूख देखा जा रहा है। दोनों के पीछे कारण एक ही है कि हम बेहतर सांड और दुधारू पशु की उन्नत नस्लें पर गौर नहीं करते, जोर नहीं देते। हमें इससे बाहर आना होगा। ऐसे कार्यक्रमों और योजनाओं को तूल देना होगा, जो पशु उत्पादकता में सुधार लाएं।

हमारे देश में लंबे समय से किसान अपने पास दो–तीन दुधारू पशु ही रखता रहा है। इससे उसकी घरेलू जरूरत पूरी हो जाती है। और अगर कोई पशुपालक है, तो 50–60 पशु रख कर संतुष्टि कर लेता है। घरेलू खपत के बाद शेष दूध को स्थानीय बाजार तक पहुंचा देता है। ज्यादा पशु हुए तो बढ़ा हुआ दूध सहकारी या फिर निजी संस्थाएं दरवाजे से ही ले जाती हैं। अब इसमें कुछ दुग्ध कंपनियां तो बेहतर दाम दे देती हैं कुछ नहीं। पशुपालक को इस स्थिति से उबरना होगा। पशुओं की संख्या बढ़ानी होगी, वो भी बेहतर नस्ल के बेहतर उत्पादकता लिए पशुओं के साथ।

पशु खरीद में आर्थिक मदद

अब समय आ गया है कि पशुपालक डेरी उद्यमी बनें। कभी छोटा–मझोला पशुपालक पशु खरीदने से पहले सोचा करता था कि पैसा कहां से आएगा, हिम्मत कर भी लेता था तो साहूकारों

के चंगुल में जा फंसता था। उसे चुकाना भी सहज नहीं होता था, मगर अब परिस्थितियां बदली हुई हैं। आप डेरी उद्यमी बनने की सोचिए, कदम आगे बढ़ाइए आपको पशु खरीदने, आवास बनाने, ताजा हरा चारा खरीदने, कृषि उपकरण लेने वगैरह के लिए आसान ऋण मिल जाएगा। यही नहीं, पशु ऋण का 'कोम्बो पैक' भी है। इसमें पशु खरीदने के अलावा, मोटर साइकिल और मोबाइल के लिए भी ऋण दिया जाता है।

डेरी में महिलाओं का उत्कृष्ट योगदान

रोचक बात यह है कि इसके लिए किसान को बैंकों के चक्कर लगाने के लिए भटकना भी नहीं पड़ता, खुद बैंक दरवाजे पर पहुंचती हैं। कुछ बैंक किसानों से जुड़ी कंपनियों के साथ संपर्क कर किसानों को ऋण देने के लिए ऋण मेला का आयोजन करती हैं और तत्काल ऋण स्वीकृति पत्र और चैक भी देती हैं। बैंक ऑफ बड़ौदा और आईडीबीआई ऐसी ही बैंक हैं, जिन्होंने देश की अग्रणी निजी दुग्ध उत्पादक संस्था क्वालिटी लिमिटेड के साथ मिल कर बड़ी संख्या में पशुपालकों को पशु ऋण प्रदान किया है। अभी तक उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान आदि के कितने ही किसान इससे लाभान्वित हो चुके हैं। इनमें एक बड़ी संख्या उन पशुपालकों की है, जो कभी दो–चार पशु ही रखे हुए थे, मगर आज उनके पास दस गुना से भी अधिक पशु हैं। मेरठ के सरधना गांव का पशुपालक हाजी याकूब इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण है, जिसने कभी केवल दस पशुओं से छोटी डेरी की शुरूआत की थी। आज उसके पास तीन हजार से ज्यादा उन्नत नस्ल की भैंसें हैं, जिनसे वह बड़ी मात्रा में दूध प्राप्त कर अमूल, क्वालिटी लिमिटेड, नमस्ते इंडिया आदि को गुणवत्तापूर्ण दूध की आपूर्ति करता है। यही नहीं इस सफल पशुपालक ने अपने पशु परिसर में ही एक चिलिंग सैंटर भी स्थापित कर दिखाया है। जानते हैं ऐसा कैसे संभव हो सका, इसके पीछे भी उसकी सही सोच, समर्पण और ज्ञान है। उसने विभिन्न स्तर पर पशु खरीदने, आवास

पशुओं की बेहतर देखभाल है जरूरी

बनाने, आधुनिक डेरी उपकरण खरीदने आदि के लिए अपनी कम पूंजी के आगे घुटने नहीं टेके, बल्कि बैंक की ऋण सुविधा का पूरा–पूरा लाभ उठाया। आज वह एक डेरी उद्यमी बन चुका है। झिझक निकालिए, हिम्मत बढ़ाइए और पशुपालकों को मिलती सुविधिओं का लाभ उठाइए।

सरकार के मदद के हाथ

डेरी विकास का बदलता स्वरूप और बढ़ते चरण ही छोटे और मझोले पशुपालकों को डेरी उद्यमी बनाएंगे। हाल ही में सरकार द्वारा 5000 करोड़ रुपए का आवंटन डेरी विकास के लिए किया गया है। इससे पहले भी सरकार द्वारा 'दूसरी श्वेत क्रांति' को पुष्ट करने के लिए विभिन्न योजनाओं के लिए बड़ी धनराशि आवंटित की जा चुकी है। इसमें पशुधन संजीवनी कार्यक्रम के तहत नकुल स्वास्थ्य पत्र, उन्नत प्रजनन तकनीकें, ई–पशुधन हाट और राष्ट्रीय आनुवंशिकी केंद्र की स्थापना के लिए 850 करोड़ रुपए दिए जा चुके हैं। यह आवंटन तो वह है, जो डेरी विकास को सीधा प्रभावित करता है। इसके अलावा, ग्रामीण सड़कों का विकास, विद्युतीकरण, शहरी ग्रामीण समूह विकास आदि वे योजनाएं हैं, जो डेरी उद्यमिता में सहायक हैं। जाहिर है, अगर शहरों को जोड़ती सड़कें सही हालात में होंगी, तो दूध का आवागमन बेहतर और त्वरित होगा। ऐसे ही अगर ग्रामीण क्षेत्र में बिजली नियमित रहेगी, तो डेरी से जुड़ी क्रियाएं अबाध गति से चलेंगी। और अगर ग्रामीण और शहर के बीच सामूहिक तालमेल रहेगा, तो डेरी उद्यमिता बेहतर स्तर पर फलेगी–फूलेगी।

कुशलता से विकास

डेरी उद्यमिता के लिए स्किल यानी क्षेत्र में कुशलता हासिल करना आवश्यक है। डेरी उद्यमिता का आधुनिकीकरण किया जाना जरूरी है, वो भी विशेषज्ञता के साथ। इसमें आईसीटी स्किल, समस्याओं से निपटने के लिए साफ्ट स्किल, समूह में सीखना, समूह में रह कर काम करने का

डेरी बाजार को मजबूती देनी होगी

डेरी उद्यमिता के उभरते क्षेत्र ने देश में दूध की उपलब्ध्ता इस हद तक बढ़ा दी है कि देश में दूध भी सरप्लस यानी अतिरिक्त मात्रा में है। अब किसी भी मौसम में दूध की कमी नहीं होती। इसलिए जरूरी हो जाता है कि दूध और इसके उत्पादों की बिक्री के लिए उचित और आधुनिक बाजार व्यवस्था हो। महत्वपूर्ण बात यह है कि आज उपभोक्ता स्वच्छ और गुणवत्तापूर्ण दूध और दुग्ध उत्पादों की तलाश में रहता है और मुंह मांगे दाम देने में भी झिझकता नहीं है। सरकार द्वारा बाजार में विदेशी कंपनियों को न्यौता देना एक महत्वपूर्ण शुरूआत है। इससे न केवल बाजार में बेहतर दूध और उत्पादों का आगमन होगा, बल्कि बेहतरी के लिए प्रतिस्पर्धा भी बढ़ेगी। यही नहीं भारतीय डेरी उद्यमियों को बाजार के नए मापदंडों का भी ज्ञान होगा। देश में दुग्ध को लेकर आज की स्थिति यह है कि कुल दुग्ध उत्पादन का 20 से 22 प्रतिशत संगठित डेरी क्षेत्र में है, तो 25 से 30 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में है। विदेशी कंपनियों के आने से संभवतः इसमें बदलाव होगा।

वातावरण बनाना, और इन सबके ऊपर प्रभावी संचार यानी डेरी उद्यमिता में उपयोगी एक–दूसरे की बात का सहज प्रसार भी जरूरी है। कई दशाओं में स्थिति यह है कि ग्रामीण स्तर पर रोजमर्रा के दुग्ध संग्रह के लिए स्किल वर्कर उपलब्ध नहीं हो पाते। इससे पूरा डेरी नेटवर्क प्रभावित होता है, जिससे चिलिंग संेटर को प्रशिक्षित व्यक्तियों की सुविधाएं नहीं मिल पातीं। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि ग्रामीण स्तर पर ही युवाओं को डेरी से जुड़े विभिन्न कार्यकलापों में आधुनिक रूप से प्रशिक्षित किया जाए। कृषि शिक्षा से जुड़े जो संस्थान हैं, वहां डेरी शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए। वहां डिग्री और डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाए जाएं, ताकि अपना पाठ्यक्रम पूरा कर बाहर निकलने वाले विद्यार्थी जब स्टार्टअप की शुरूआत करें, तो उन्हें इससे जुड़े हर पहलू का ज्ञान हो। ज्ञान पाना एक दिन की बात नहीं होती, सीखने की कला तो जीवनपर्यंत चलती रहनी चाहिए। डेरी विकास के लिए भी ऐसी पद्धति विकसित होनी चाहिए, जो जीवन भर सिखाए।

दूध एक जल्द खराब होने वाला उत्पाद है, यानी इसको सामान्य तापीय दशाओं में लंबे समय तक नहीं रखा जा सकता है। इसके लिए बड़े स्तर पर अभिशीतन इकाइयों की आवश्यकता है। राहत देता तथ्य यह भी है कि देश की कुल कोल्ड चेन्स का तीन चौथाई भाग डेरी में ही प्रयोग किया जाता है। मगर फिर भी इसकी आवश्यकता कहीं अधिक है। स्पष्ट है कि पर्याप्त कोल्ड चेन्स की उपलब्ध्ता के बिना उचित डेरी विकास संभव नहीं है। सरकार को इस दिशा में अनुदान की प्रभावी व्यवस्था करनी होगी। कोल्ड चेन्स की उपलब्धता छाछ, दूध, क्रीम, मक्खन, लस्सी, योगहर्ट, पनीर, फ्लेवर्ड मिल्क, आइस्क्रीम जैसे दुग्ध उत्पादों को सुरक्षित रख बेहतर बाजार देने में सहायक होती है।

डेरी उद्यमिता में असाधारण विकास के कारण अब समय आ गया है कि भारतीय दूध और उसके उत्पादों को विश्व बाजार तक पहुंचा कर पैठ जमाई जाए और देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित की जाए। चूंकि भारत में दूध उत्पादन 70 मिलियन किसान परिवारों की रोटी–रोजी तय करता है और पूरे देश की पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करता है, अतः जब विभिन्न देशों के साथ फ्री ट्रेड एग्रीमेंट' पर हस्ताक्षर किए जाएं, तो डेरी की सुरक्षा पर विशेष गौर दिया जाए। अभी तक 'नाऊ आन–नाऊ ऑफ' यानी अब चाहिए, अब नहीं चाहिए कि स्थिति है, अतः इसे नियमित किया जाना बेहद जरूरी है, इससे लंबे समय के लिए संबंध स्थापित होंगे।

कुल मिलाकर दूध की देश में स्थिति यह है कि डेरी अब 'फार्मिंग नहीं, इंडस्ट्री' बनने की राह पर है। डेरी उद्यमिता अपनाइए और सफलता पाइए। ■

सावधानी

स्वच्छ दूध उत्पादन कैसे करें ?

बलबीर सिंह बैनिवाल एवं विपुल जागलान
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

एक स्वस्थ पशु के अयन में जो दूध पैदा होता है, वह लगभग जीवाणु रहित होता है। लेकिन जैसे ही यह दूध थन में पहुंचता है तो इसमें विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं यानी बैक्टीरिया से संक्रमण होना शुरू हो जाता है। इसके बाद सबसे अधिक जीवाणु बर्तनों से दूध में आते हैं। कुछ विशेष सावधानियां बरत कर हम स्वच्छ दूध उत्पादन कर सकते हैं। फिर भी उत्पादन स्तर पर ऐसी परिस्थितियां बनाना संभव नहीं है कि दूध बिल्कुल ही जीवाणु रहित हो। वातावरण से भी दूध में तरह-तरह के जीवाणुओं का संक्रमण होता रहता है। ये जीवाणु समय के साथ अपनी संख्या में वृद्धि करते रहते हैं और दूध के विभिन्न घटकों का विखंडन करते रहते हैं। इनके द्वारा दूध में पैदा किए गए रसायन दूध को जल्दी खराब कर देते हैं। हमारे देश में उत्पादन स्तर से लेकर दूध संयंत्र तक दूध को पहुंचने में काफी समय लग जाता है। इसीलिए ऐसे उपायों की जरूरत है जो दूध को सुरक्षित अवस्था में दूध संयंत्र तक पहुंचा सकें।

हमारे देश के अधिकतर हिस्सों में वर्ष के ज्यादातर समय गर्मी रहती है। दूध में पहले से मौजूद जीवाणु ऐसे तापमान में बहुत तेजी से वृद्धि करते हैं, इसलिए दूध के जल्दी खराब होने का खतरा होता है। जीवाणु दो प्रकार के हो सकते हैं – हमें बीमार करने वाले रोगजनक जीवाणु और दूध को खराब करने वाले जीवाणु। बीमारी पैदा करने वाले जीवाणुओं में क्षय रोग का बैक्टीरिया सबसे महत्वपूर्ण है। यदि पशु को क्षय रोग है तो यह बैक्टीरिया पशु के दूध में आ सकता है और हमें बीमार कर सकता है। कुछ अन्य बीमारियां भी हमें दूध से लग सकती

हैं। दूध को खराब करने वाले जीवाणु दूध के अंदर विभिन्न प्रकार की रासायनिक प्रक्रिया करके दूध को खराब कर देते हैं। इनमें मुख्य रूप से हैं एसिड उत्पादक जीवाणु। इसके अलावा कुछ बैक्टीरिया ऐसे भी हैं जो प्रोटीन को तोड़ने वाले एंजाइम प्रोटीएज बनाते हैं। दूध को गर्म करने से बीमारियों के जीवाणु तो मर जाते हैं, लेकिन ये एंजाइम नष्ट नहीं होते और प्रोटीन को तोड़ते रहते हैं। कुछ बैक्टीरिया ऐसा टॉक्सिन बनाते हैं जो गर्म करने से भी नष्ट नहीं होता और यह भी हमें बीमार कर सकता है। इसलिए आवश्यक है कि दूध को निकालते ही जल्दी से जल्दी ठंडा कर दिया जाए ताकि ऐसे जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि ना हो सके।

दूध ठंडा, रहे चंगा

कुछ विवेकहीन व्यापारी दूध में ऐसे रसायन डाल देते हैं, जिनसे जीवाणुओं की वृद्धि रोकी जा सके और दूध को आखिरी ठिकाने पर सही अवस्था में पहुंचाया जा सके। लेकिन ये रासायनिक पदार्थ दूध में मिलाना गैरकानूनी है क्योंकि ये हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। इसलिए दूध का ग्राम स्तर पर ठंडा करना या शीतकरण दूध सुरक्षित रखने का एक कारगर उपाय है। जब हम दूध को ठंडा कर देते हैं तो उसमें मौजूद जीवाणु पनप नहीं पाते और इस तरह से उनकी संख्या एक सीमा में बनी रहती है। इस प्रकार दूध बिना किसी अवांछित परिवर्तन के अपने ठिकाने पर पहुंचाया जा सकता है। दूध को विभिन्न विधियों से ग्राम स्तर पर ठंडा किया जा सकता है। कुछ व्यापारी एक बड़ी टंकी या ड्रम में बर्फ डाल देते हैं और जैसे–जैसे पशुपालक दूध लाते हैं उसका नाप–तोल करने के बाद बर्फ वाली टंकी में पलट देते हैं। लेकिन यह तरीका गलत है, क्योंकि इससे दूध में पानी मिलता रहता है और संयंत्र में इस दूध को विभिन्न उत्पादों में बदलने में काफी ऊर्जा खर्च होती है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि आमतौर पर बाजार में जिस पानी से बर्फ बनती है वह प्रदूषित होता है और इस तरह दूषित पदार्थ दूध में मिल जाते हैं। इससे बेहतर तरीका यह हो सकता है कि एक साफ–सुथरे दूध के ड्रम को ही बर्फ के पानी में रख दिया जाए और ऐसे ड्रमों में ही दूध एकत्रित किया जाए। लेकिन हर रोज बर्फ की उपलब्धता ग्राम स्तर पर आसान नहीं है। कुछ साल पहले ग्राम स्तर पर दूध को ठंडा करना संभव नहीं था। लेकिन आज बाजार में इस तरह के कई साधन उपलब्ध हैं जो ग्राम स्तर पर दूध

स्वच्छ दूध तो सेहत दुरूस्त

ठंडा कर सकते हैं। इनमें जो सबसे पहले आए वह कम क्षमता के चिलर थे। यह केवल बिजली से चलते थे। लेकिन इनकी विशेषता यह थी कि ये दोहरी चादर वाले थे और इनके बीच में पानी होता था और वह चिलर के चलने पर जमकर बर्फ बन जाता था।

इस प्रकार दूध जैसे ही उनमें पलटा जाता तो तुरंत ठंडा हो जाता था। यदि कुछ समय भी बिजली मिल जाए तो ये चिलर बर्फ जमा लेते थे और पूरा दिन बिजली ना रहने पर भी यह काम

कर सकते थे। लेकिन बिजली की अनुपलब्धता एक प्रकार का संकट थी। आकार के हिसाब से ये चिलर ऊर्ध्वाधर या क्षैतिज हो सकते थे। दूसरे प्रकार के चिलर प्लेट चिलर हैं, जो दूध को तुरंत ठंडा कर सकते हैं। इस प्रकार के चिलर में वैकल्पिक प्लेटों के बीच में बर्फ का पानी और दूध उल्टी दिशा में चलते हैं, लेकिन थोड़े दूध के लिए इस प्रकार के चिलर अनुपयुक्त हैं। बल्क मिल्क कूलर आज के समय में दूध को ग्राम स्तर पर ठंडा करने वाला एक क्रांतिकारी यंत्र है। इनकी क्षमता 500 लीटर से लेकर कुछ हजार लीटर तक हो सकती है। ये बिजली के अभाव में डीजल से भी चल सकते हैं। ग्राम स्तर पर कार्य करने वाले छोटे व्यापारियों और सहकारी समितियों के लिए आवश्यक है कि बल्क मिल्क कूलर का अवश्य उपयोग करें ताकि दूध की गुणवत्ता बनी रहे और दूध संयंत्र तक ज्यों का त्यों सुरक्षित रूप से पहुंचाया जा सके। सहकारी क्षेत्र में दूध एकत्रित कर रही इकाइयों को बल्क मिल्क कूलर लगाने के लिए सरकार विशेष रूप से प्रेरित करती है। सरकार अनुदान भी देती है और बल्क मिल्क कूलर के प्रचालन हेतु प्रशिक्षण भी दिया जाता है। सारांश यह है कि हमें उत्पादन स्तर पर ही दूध को तुंरत से तुरत ठंडा कर देना चाहिए, ताकि दूध की गुणवत्ता बनी रहे। ■

'दुग्ध सरिता' का अभियान, संपन्न बनें डेरी किसान

लेखकों से निवेदन

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा लोकप्रिय द्विमासिक पत्रिका 'दुग्ध सरिता' के प्रकाशन का शुभारंभ एक अभियान के रूप में किया गया है। इसका उद्देश्य नयी जानकारियों और उपयोगी सूचनाओं को डेरी किसानों, डेरी उद्यमियों तथा डेरी व्यवसायियों तक पहुंचाकर उनकी सकल आमदनी को बढ़ाना तथा डेरी सैक्टर का विकास करना है। यदि आप डेरी वैज्ञानिक, डेरी किसान, डेरी उद्यमी, डेरी सहकारिता या डेरी सैक्टर से जुड़े हैं तो हमारा अनुरोध है कि 'दुग्ध सरिता' में अपना लेखकीय योगदान देकर हमारे अभियान में भागीदार बनें और उसे सफल बनाएं।

आप हमें जानकारीपूर्ण सचित्र लेख, अपने सकारात्मक अनुभव, सफलता की कहानियां, केस स्टडीज़ तथा अन्य उपयोगी जानकारी प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। बस गुजारिश सिर्फ इतनी है कि यह सामग्री सरल और सहज भाषा में तथा हमारे लक्ष्य वर्ग के लिए उपयोगी हो। हम अधिकतम 2,000 शब्दों तक की रचनाओं का स्वागत करते हैं और 500 शब्दों से कम के आलेखों को संक्षिप्त रूप में प्रकाशित करने की व्यवस्था है। आपके द्वारा भेजे गये आलेखों को तकनीकी मूल्यांकन के उपरांत प्रकाशित किया जाएगा और इस संबंध में संपादक मंडल का निर्णय अंतिम तथा अनिवार्य रूप से मान्य होगा। हमारे लिए आपका योगदान अमूल्य है, परंतु प्रकाशित रचनाओं पर एक सांकेतिक धनराशि मानदेय के रूप में प्रदान की जाती है। आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

- *कृपया अपनी रचनाएं कृतिदेव 016 फोंट में ई–मेल करें। हमारा ई–मेल पता है : dsarita.ida@gmail.com*
- *रचनाओं के साथ बेहतर गुणवत्ता के और सार्थक चित्रों को कैप्शन के साथ .jpg फार्मेट में भेजें।*

पशुओं को संक्रमण रोगों से बचाएं, टीकाकरण अवश्य कराएं

डा. राजेन्द्र सिंह
वरिष्ठ पशु विस्तार विशेषज्ञ, रोहतक
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

पशुओं में कई बार संक्रमण रोग आ जाते हैं, जिनका आमतौर पर कोई ज्यादा उपचार नहीं है। संक्रमण रोगों से बचाव का एक मात्र उपाय टीकाकरण है। संक्रमण से होने वाली बीमारियां कई बार जानलेवा भी हो सकती हैं, तथा ये बीमारियां एक पशु से दूसरे पशु तक पहुंचती हैं। इन रोगों की रोकथाम के लिए हरियाणा राज्य में पिछले करीबन छह साल से टीकाकरण का कार्यक्रम पशुपालन विभाग द्वारा बड़े जोर-शोर से चलाया जा रहा है। साथ ही जो पशुपालक अन्य राज्यों से, बाहर से पशु खरीद कर लाता है, उसको यहां लाने पर अन्य पशुओं से अलग रखें तथा टीकाकरण करवाएं जो पशुपालन विभाग द्वारा मुफ्त लगाए जाते हैं।

पशुओं में संक्रमण से होने वाले जिन रोगों की टीकाकरण से रोकथाम की जा सकती है, उनका विवरण आगे दिया जा रहा है।

मुंहखुर रोग

यह गाय, भैंस, भेड़, बकरी व सूअर में विषाणु से हाने वाली छूत की बीमारी है। प्रभावित

सही समय पर टीकाकरण से रोग सुरक्षा

पशुओं में बुखार होकर, मुंह व जीभ पर छाले होकर जख्म हो जाते हैं, जिसके कारण पशु मुंह से लार टपकाता रहता है और चारा–दाना खाना बन्द कर देता है। पैरों में खुरों के बीच जख्म होने से चलने में लंगड़ाता है और कई बार बिल्कुल लाचार हो जाता है। कई बार इस रोग के कारण पशु की आंख व हवाना में भी संक्रमण आ जाता है। इस रोग के कारण दूध उत्पादन बन्द हो जाता है। हालांकि इस रोग से पशु की मौत तो नहीं होती, लेकिन यह पशु पालकों के कारोबार को बहुत प्रभावित करता है, क्योंकि दूध उत्पादन व स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है। बीमारी की रोकथाम के लिए वर्ष में एक बार यह टीका लगवाना जरूरी है, यह टीका 2 मिली. चमड़ी के नीचे या मांसपेशियों में लगाया जाता है। पशु अस्पतालों में यह सुविधा मुफ्त उपलब्ध है।

गलघोंटू रोग

यह पाश्चुरेला नामक कीटाणु से होने वाली गंभीर बीमारी है, जो खासतौर से भैंस, तथा कई बार गाय, भेड़ तथा सूअर आदि पशुओं को प्रभावित करती है। इस बीमारी में पशु को 106–107 डिग्री फा. तक बुखार चला जाता है तथा निमोनिया होने के कारण पशु को सांस लेने में तकलीफ होती है। इस कारण इस रोग को घरड़ा नाम से भी जाना जाता है। रोग में कई बार पशु के गले में सूजन होकर उसकी सांस बन्द हो जाती है तथा कई बार 24 घण्टे में मृत्यु भी हो जाती है। इसलिए इसे गलघोंटू का नाम दिया गया है। यह बीमारी बरसात के मौसम के तुरन्त बाद या सर्दी के मौसम में अधिक संभावित होती है, क्योंकि इस वक्त पशु के ऊपर मौसम का दबाव भी होता है। इस रोग से बचाव के लिए साल में दो बार टीका लगवाना आवश्यक है। यह टीका मार्च अन्त से जून तक तथा अक्तूबर से नवम्बर माह तक लगवा लेना चाहिए। यह टीका भी पशु अस्पताल में या गांव में घर–घर जाकर पशुपालन विभाग द्वारा बिना किसी शुल्क के लगाया जाता है।

संक्रामक गर्भपात (ब्रुसेलोसिस)

भैंसों व गायों में ब्रुसेला नामक कीटाणु से यह बीमारी होती है तथा यह बीमारी मनुष्यों को भी लग जाती है। इस बीमारी में पशु की प्रजनन क्षमता समाप्त हो जाती है तथा गर्भवान पशुओं का गर्भपात हो जाता है, जिसके कारण पशु स्वस्थ बच्चा पैदा करने में अक्षम हो जाता है। पशुओं से मनुष्यों को लगने के कारण इस बीमारी को रोकना बहुत जरूरी है और इसके बचाव के लिए चार से छः महीने तक की केवल मादा बाल पशु को टीका लगवाना चाहिए, जो मुफ्त लगाया जाता है।

लंगड़ा बुखार

यह रोग विशेषतौर से जवान गाय को क्लोस्ट्रिडियल नामक कीटाणु से होता है। कई बार

यह रोग भैंस, बकरी, भेड़ को भी प्रभावित करता है। इस रोग के संक्रमण से स्वस्थ व भारी–भरकम शरीर वाली गाय के पुठ्ठों में सूजन आ जाती है, जिसके कारण पशु लंगड़ाने लग जाता है और सूजन वाली जगह पर जहरीली गैस व पानी इकट्ठा होकर पशु को बेहाल बना देते हैं। इसके कारण अन्त में पशु की मृत्यु हो जाती है। भैंस में यह बीमारी कन्धे के आगे गर्दन के दोनों ओर, जहां मांसपेशियों में चर्बी होती है, को प्रभावित करती है। इस रोग से बचाव के लिए साल में एक बार बरसात से पहले छोटे व बड़े पशुओं को 5 मिली. का टीका चमड़ी के नीचे पशु अस्पतालों में मुफ्त लगाया जाता है।

चकरी रोग (एन्टेरोटोक्सिमिया)

यह रोग भेड़ व बकरी में क्लोस्ट्रिडियल नामक कीटाणु के कारण होता है। रोग में पशु चक्कर काटने लग जाता है तथा अन्त में प्रभावित पशु की मृत्यु हो जाती है। बचाव के लिए 25 मिली. टीका चमड़ी के नीचे लगाते हैं तथा 14 दिन के बाद दुबारा से 25 मिली. चमड़ी के नीचे टीका लगाया जाता है। इससे पशु को बीमारी से लड़ने की पूरी ताकत मिलती है। एक साल बाद दुबारा से टीका लगवाना जरूरी है। यह टीका पशु अस्पताल में मुफ्त लगाया जाता है।

भेड़–चेचक

यह रोग बड़ा भयंकर व घातक संक्रामक रोग है। यह रोग विषाणु द्वारा भेड़ व बकरी को प्रभावित करता है। प्रभावित पशु को तेज बुखार होकर अन्त में मृत्यु हो जाती है। इस बीमारी से भेड़–बकरी के बाड़े के बाड़े मौत के कारण खाली हो जाते हैं। रोग से बचाव के लिए 0.5 मिली. टीका पिछली टांग के अन्दर की तरफ चमड़ी के नीचे लगाया जाता है। जिन इलाकों में यह बीमारी आती है, वहां एक साल में तीन बार यह टीका लगवाना जरूरी है।

सूकर ज्वर (स्वाइन फीवर)

यह रोग छोटे सूअर व जवान सूअरों में एक विशेष विषाणु के संक्रमण से होता है। इस रोग से बुखार होकर पशु जल्दी मर जाता है। रोग से बचाव के लिए साल में एक बार टीका लगवाना जरूरी होता है। दस सूअरों के लिए एक वायल में टीका उपलब्ध है, जिसे 10 मिली. नार्मल सैलाइन में घोलकर एक मिली. प्रत्येक सूअर को जांघ के अन्दर की तरफ चमड़ी के नीचे लगाते हैं।

पेस्ट डेस पेटिट्स रूमीनैंट

यह बीमारी विषाणु से भेड़–बकरी को होती है। इस बीमारी को पी.पी.आर. के नाम से भी जाना जाता है। इस रोग में पशुओं की आंतों में घाव होकर खूनी दस्त लग जाते हैं। बीमारी के कारण 100 प्रतिशत पशुओं की मौत हो सकती है। बचाव के लिए एक मिली. चमड़ी के नीचे टीका लगवाना चाहिए। यह टीका तीन वर्ष बाद दुबारा लगवाना चाहिए तथा यह टीका भी पशु अस्पताल में मुफ्त लगाया जाता है।

इन बीमारियों के अलावा पशुओं में हड़कवापन (रेबीज) बीमारी होने का भय भी होता है, जो पशुओं को पागल कुत्ते, नेवला व बन्दर आदि के द्वारा काटे जाने से होता है। यह बीमारी विषाणु से होती है तथा लाइलाज है। इसका बचाव केवल टीकाकरण से ही संभव है। आजकल रेबीज के बचाव हेतु छह टीके लगवाने जरूरी हैं। पहला टीका, जितना जल्दी लगे उतना ही ठीक है। यदि चेहरे पर पागल कुत्ते ने काटा हो तो पहला टीका दोगुना खुराक का लगाया जाता है। इसके बाद तीसरे दिन, सातवें दिन, 14वें दिन, 28वें दिन व 90वें दिन भी टीका लगवाना जरूरी होता है। यह टीका बाजार में मिलता है। पशुओं को सभी टीके सही समय पर लगवाकर रोगों से सुरक्षित रखें। ■

रिपोर्ट

आईडीए के अध्यक्ष ने डेरी में कौशल विकास पर जोर दिया

बीती 6 अप्रैल, 2018 को इंडियन डेरी एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. जी.एस. राजौरिया ने प्रसिद्ध आनंदा डेरी की पिलखुवा के गांव खैरपुर खैराबाद स्थित थर्ड यूनिट में 'डेरी साइंस कोर्सेज इन हाउस' का शुभारंभ किया। इस अवसर पर डेरी में कौशल विकास की इस नई पहल की सराहना करते हुए उन्होंने आनंदा डेरी को सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने डेरी कर्मियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि डेरी कर्मियों के कौशल विकास के साथ यह भी आवश्यक है कि पशुपालकों की व्यावहारिक समस्याओं को जमीनी स्तर पर जाना–समझा जाए और डेरी उद्योग द्वारा इनका निराकरण किया जाए। डॉ. राजौरिया ने कहा कि पशुपालक देश के डेरी उद्योग की बुनियाद हैं, इसलिए इनके हित में ही देश के डेरी विकास का उज्ज्वल भविष्य छिपा है। अपने सारगर्भित व्याख्यान में आईडीए के अध्यक्ष ने भारतीय डेरी उद्योग की उभरती समस्याओं और उनसे सम्बन्धित समाधान की ओर श्रोताओं का ध्यान खीचा।

आनंदा के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक आर. एस. दीक्षित ने डॉ. राजौरिया के संबोधन की सराहना करते हुए कहा कि हमें एक टीम के रूप में काम करते और बढ़ते रहना है। प्लांट के कर्मचारियों के हितों और कौशल विकास को ध्यान में रखते हुए उनको अधिक कुशल व सक्षम बनाने के लिये 'डेरी साइंस कोर्सेज इन हाउस' का आयोजन किया जा रहा है। महाप्रबंधक एस. के. जाना, प्रोफेसर एस. के. शुक्ला, के. के. भद्रा, ए. एस. तेवतिया, आर. एन. पांडे, वी. के. अरोड़ा, अपूर्वा, के. के. चौधरी, रविन्द्र मलिक, हरीश मित्तल समेत अन्य विभागाध्यक्ष भी इस विशेष अवसर पर उपस्थित रहे। ■

डॉ. जी.एस. राजौरिया के साथ आनंदा की टीम

Vadilal®©
PURE MILK
PURE ICE CREAM
Occasionzz
अमेरिकन नट्स
आइसक्रीम टब
GOURMET
Super Premium Ice Cream
पिस्टैशीओ आल्मंड फज
Occasionzz
AMERICAN NUTS
GOURMET
PISTACHIO
ALMOND
FUDGE SUPER
PREMIUM ICE CREAM
BADAM CARNIVAL
जम्बो
आइसक्रीम कप
कुकीज़ 'एन' क्रीम
1+1 आइसक्रीम पार्टी पैक
बादाम कार्निवल
Creative visualisation only   Conditions apply
www.vadilalicecreams.com
thecointegrated.com 2939

2018

पशुपालक

मई

1 इस महीने तापमान अधिक होता है और कुछ क्षेत्रों में धूल भरी आंधी चलती है तथा गरज के साथ छींटे भी पड़ते हैं।

2 गर्मी के कारण पशु अकसर कुछ रोगों और समस्याओं से घिर जाते हैं, जैसे बुखार, शरीर में पानी की कमी, शरीर में आवश्यक लवणों की कमी, भूख ना लगना और उत्पादकता में कमी।

3 पशुओं को गर्मी और दोपहर की गर्म व सूखी लू से बचाकर रखना चाहिए।

4 इस दौरान अकसर चारे की कमी हो जाती है, इसलिए पहले से ही चारे की व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

5 पशुओं के शरीर में आवश्यक लवणों की कमी की संभावना को देखते हुए आवश्यक है कि उनके आहार और पीने के पानी में समुचित मात्रा में लवण मिश्रण मिलाया जाए।

6 मौसम के अनुसार पशु के आहार में बदलाव करते रहना चाहिए। इस समय पशु के आहार में गेहूं के भूसे और ज्वार की मात्रा अधिक कर देनी चाहिए।

7 इस समय डेरी पशुओं को संतुलित आहार अवश्यक दें, इससे दूध क्षमता में कमी नहीं आती।

8 पशुओं की 'डिवर्मिंग' करनी चाहिए। इस समय मक्का और अन्य चारा वाली बहुवर्षीय घासों की कटाई कर लेनी चाहिए।

क कैलेंडर

2018

जून

1 इस महीने भी देश के अधिकांश भागों में मई की तरह तपन मौजूद रहती है, जिससे पशुओं में पिछले महीने जैसी समस्याओं की संभावना बनी रहती है।

2 मई की तरह इस महीने भी पशुओं को गर्मी और लू से बचाये रखें, खासतौर से दोपहर की गर्म हवाओं से बचाना बहुत आवश्यक है ।

3 पशुओं को बाड़े के अंदर छाया में रखें या पेड़ों की आरामदायक छांव में बैठाएं ।

4 पशुओं को चारागाह में चराने के लिए सुबह जल्दी ले जाएं या शाम या रात में घूमने के लिए छोड़ें । एफएमडी सहित अन्य रोगों के लिए टीके लगवाएं।

5 पर्याप्त मात्रा में पानी जरूर पिलाएं। पशुओं के पास पानी हर समय उपलब्ध रहे तो बेहतर होगा । चारा फसलों की रोपाई के लिए खेत तैयार करें।

6 'पाइका' रोग से ग्रस्त पशुओं की 'डीवर्मिंग' करें और उन्हें ऐसा आहार दें जिसमें शरीर के लिए आवश्यक लवणों की पर्याप्त मात्रा मौजूद हो ।इससे उनका रोग भी ठीक हो जाएगा ।

7 यदि पशुओं को हरा चारा उपलब्ध ना करा सकें तो उन्हें विटामिन-ए का इंजेक्शन लगवाएं । पशुओं को संतुलित आहार दें, जिसमें विटामिन, आवश्यक खनिज तथा लवण अवश्य मौजूद हों।

सौजन्य
पशुपालन, डेरी और मात्स्यिकी विभाग,
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

रिपोर्ट

एनडीआरआई में 16वें दीक्षांत समारोह का आयोजन

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने विद्यार्थियों को दी नसीहत, कहा –जॉब सीकर्स की बजाए जॉब प्रोवाइडर्स बने भावी वैज्ञानिक

भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में 10 मार्च, 2018 को 16वें दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। इसमें केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की और विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज से आप सब विद्यार्थी, डेरी के क्षेत्र में प्रशिक्षित नव युवा के रूप में जाने जाओगे। अब आपको देश की दूसरी श्वेत क्रांति के अग्रदूत के रूप में अपने ज्ञान और कौशल को राष्ट्रहित में समर्पित करना है। उन्होंने विद्यार्थियों को नसीहत दी कि वे 'जॉब सीकर्स' की बजाय 'जॉब प्रोवाइडर्स' बनें। दीक्षांत समारोह के दौरान बी.टैक के 27, मास्टर के 145 तथा पी–एच.डी के 106 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गईं।

मुख्य अतिथि ने कहा कि पिछले 20 वर्षों से हमारा भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश रहा है। इस उपलब्धि को हासिल करने में एनडीआरआई जैसे अनुसंधान संस्थानों का योगदान रहा है। विगत तीन वर्षों में दुग्ध उत्पादन 137.7 मिलियन टन से बढकर 165.4 मिलियन टन हो गया है। वर्ष 2014 से 2017 के बीच यह वृद्धि 20 प्रतिशत से भी अधिक रही है। इस प्रकार 2014–17 में डेरी किसानों की आय में 23.77 प्रतिशत वृद्धि हुई है। भारत सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि देश के किसान की आय बढ़े, युवाओं को रोजगार मिले

दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि- केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह

तथा बच्चों और माताओं को संपूर्ण पोषण मिले। राधा मोहन सिंह ने कहा कि हमारे किसान भाइयों की आय को वर्ष 2022 तक दोगुना करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जो महायज्ञ प्रारंभ किया है, उसमें यहां उपस्थित वैज्ञानिक समुदाय का यही महान योगदान होगा।

एनडीआरआई के निदेशक डा. आर.आर.बी सिंह ने डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देते हुए बताया कि एनडीआरआई में इस समय 928 विद्यार्थी विभिन्न संकायों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, इसमें 352 लड़कियां व 5 विदेशी विद्यार्थी शामिल हैं। उन्होंने बताया कि इस वितीय वर्ष में विभिन्न डेरी उद्योगों को 10 टेक्नोलोजी हस्तांतरित की गयी और दो टेक्नोलोजी पेटेंट ग्रांट हुए। ■

योजना

डेरी विकास के राष्ट्रीय कार्यक्रम का लाभ उठाएं

प्रस्तुति : सीमा चोपड़ा
निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि भवन, नई दिल्ली

विश्व के दुग्ध उत्पादन करने वाले देशों में भारत पहले स्थान पर है और यहां विश्व में सबसे बड़ी बोवाइन आबादी है। भारत की 60 मिलियन बोवाइन आबादी सीमांत, छोटे और मध्यम किसान परिवारों के पास है। इनके पास औसतन दो से तीन दुधारू पशुओं का समूह है। आज डेरी उद्यम लाखों ग्रामीण परिवारों के लिए आय का मुख्य स्रोत है और इसकी विशेष रूप से छोटे, सीमांत तथा कृषिरत महिलाओं को रोजगार देने तथा आय सृजन करने के अवसर उपलब्ध कराने में मुख्य भूमिका है। अधिकांश दूध का उत्पादन छोटे, सीमांत किसानों तथा भूमिहीन श्रमिकों द्वारा पाले जाने वाले पशुओं द्वारा किया जाता है। भारत सरकार डेरी क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए केन्द्रीय क्षेत्र की योजनाओं या स्कीमों के माध्यम से प्रयास कर रही है। ऐसी एक प्रमुख स्कीम 'राष्ट्रीय बोवाइन प्रजनन और डेरी विकास कार्यक्रम' है।

डेरी क्षेत्र में पशुपालन, डेरी और मात्स्यिकी विभाग की चार जारी योजनाओं को समेकित कर राष्ट्रीय बोवाइन प्रजनन और डेरी विकास कार्यक्रम को तैयार किया गया है। ये

चार योजनाएं हैंः गाय और भैंस प्रजनन के लिए राष्ट्रीय परियोजना (एनपीसीबीबी), सघन डेरी विकास कार्यक्रम (आईडीडीपी), गुणवत्तापूर्ण और साफ दुग्ध उत्पादन के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाना (एसआईक्यू एंड सीएमपी) तथा डेरी क्षेत्र की सहकारी संस्थाओं को सहायता। राष्ट्रीय बोवाइन प्रजनन और डेरी विकास कार्यक्रम के तीन घटक हैंः बोवाइन प्रजनन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीबीबी), डेरी विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीडीडी) और राष्ट्रीय गोकुल मिशन।

स्कीम के घटकवार उद्देश्य

बोवाइन प्रजनन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीबीबी)

- किसानों की सुविधा के अनुसार कृत्रिम गर्भाधान की सेवाएं उपलब्ध कराना।
- कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से सभी प्रजनन योग्य मादाओं का संगठित प्रजनन कराना या उच्च आनुवंशिक गुण वाले जर्मप्लाज्म का प्रयोग करते हुए प्राकृतिक रूप से प्रजनन कराना।
- उच्च सामाजिक-आर्थिक महत्व वाली देसी बोवाइन नस्लों का संरक्षण करना, विकास करना और प्रचुर संख्या में उत्पन्न कराना।
- महत्वपूर्ण देसी नस्लों के प्रजनन के लिए गुणवत्तापूर्ण इनपुट प्रदान करना, जिससे ऐसी नस्लों के ह्रास को या विलुप्त होने से बचाया जा सके।

डेरी विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीडीडी)

- किसान को उपभोक्ता से जोड़ने के लिए कोल्ड चेन के बुनियादी ढांचे सहित गुणवत्तापूर्ण दूध के उत्पादन के लिए बुनियादी ढांचा बनाना और उसे मजबूत करना।

- दूध और दुग्ध उत्पादों को प्राप्त करने, उनके प्रसंस्करण और विपणन के लिए बुनियादी ढांचा बनाना और उसे मजबूत करना।
- डेरी पालकों के लिए प्रशिक्षण की सुविधाओं का विकास करना।
- ग्राम स्तर पर डेरी सहकारी सोसायटियों/उत्पादक कम्पनियों को मजबूत बनाना।
- पशुओं के लिए चारा और खनिज मिश्रण आदि जैसी तकनीकी निवेश सेवाएं उपलब्ध कराते हुए दुग्ध उत्पादन बढ़ाना।
- क्षमतावान दुग्ध संघों/यूनियनों के पुनर्वास में सहायता करना।

राष्ट्रीय गोकुल मिशन

- देसी पशु नस्लों के लिए नस्ल सुधार कार्यक्रम चलाना, जिससे इनके आनुवंशिक स्तर को सुधारा जा सके और स्टॉक को बढ़ाया जा सके।
- देसी बोवाइन के दुग्ध उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाना।
- विशिष्ट देसी नस्लों जैसे गिर, साहीवाल, राठी, दियोनी, थारपारकर, रेड सिंधी का प्रयोग करते हुए अज्ञात कुल के पशुओं को उन्नत करना।

बोवाइन उत्पादकता पर राष्ट्रीय मिशन

इसकी शुरूआत दुग्ध उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए नवम्बर 2016 में की गई, जिससे डेरी पालन किसानों के लिए अधिक लाभदायक बन सके। इस स्कीम का अनुपालन निम्नलिखित घटकों के साथ किया जा रहा है:

- पशु संजीवनी: इसमें यूआईडी के साथ दूध वाले पशुओं की पहचान, दूध वाले सभी पशुओं के लिए स्वास्थ्य कार्ड जारी करना और आईएनएपीएच डाटा बेस पर डाटा अपलोड करना शामिल है।
- उन्नत पुनरूत्पादी तकनीक: इसके तहत 10ए ग्रेड के सीमेन स्टेशनों और आईवीएफ सुविधाओं के साथ 50 ईईटी प्रयोगशालाओं में लिंग के आधार पर छांटी गई सीमेन उत्पादन सुविधा का सृजन किया जा रहा है।
- ई–पशु हाट पोर्टल: यह देसी नस्लों के किसानों और प्रजनकों को जोड़ने के लिए बनाया गया है।
- देसी नस्लों के लिए राष्ट्रीय बोवाइन जीनोमिक केन्द्र की स्थापना: इसकी स्थापना देसी नस्लों के बीच जीनोमिक चयन के माध्यम से दुग्ध उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए की गई।

- देसी नस्लों के रोग मुक्त उच्च आनुवंशिक गुण वाले सांडों का वितरण

स्कीम का कवरेज क्षेत्र

- इस स्कीम को पूरे देश में कार्यान्वित किया जाएगा।
- एनपीडीडी स्कीम के तहत उन राज्यों में सभी घटकों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी जहां राष्ट्रीय डेरी योजना, फेज–I का कार्यान्वयन नहीं किया गया है, जैसे दिल्ली, उत्तराखंड, गोवा, पुदुचेरी, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, जम्मू व कश्मीर, चंडीगढ़, दमन व द्वीव, लक्षद्वीप, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह। जो राज्य राष्ट्रीय डेरी योजना फेज–I में कवर हो रहे हैं, जैसे आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिल नाडु, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, वहां केवल उन घटकों को एनपीडीडी द्वारा कवर किया जाएगा जो एनडीपी के तहत कवर नहीं हो रहे।

लक्षित लाभार्थी

प्रत्येक सामाजिक–आर्थिक वर्ग के ग्रामीण पशु और भैंस पालक।

फंडिंग पैटर्न

- एनपीबीबी – सभी प्रजनन संबंधित गतिविधियों के लिए 100 प्रतिशत अनुदान उपलब्ध कराता है।
- एनपीडीडी – निम्नलिखित गतिविधियों को छोड़कर शेष सभी घटकों के लिए 100 प्रतिशत अनुदान आधार पर एनपीडीडी का कार्यान्वयन किया जाएगा:
- बड़े दूध कूलरों की स्थापना
- दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र
- दुग्ध पाउडर संयंत्र
- दुग्ध यूनियनों/संघों का पुनर्वास

उपरोक्त में से पहले तीन घटकों के लिए फंडिंग पैटर्न इस प्रकार होगाः

- एनडीपी राज्यों में 50 प्रतिशत अनुदान सहायता ।
- उत्तर पूर्वी राज्यों और जम्मू व कश्मीर, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी राज्यों में पहाड़ी क्षेत्रों (समुद्र स्तर से 1000 मीटर से अधिक) की दुग्ध यूनियनों/संघों के लिए 90 प्रतिशत केन्द्रीय सहायता।

अन्य गैर–एनडीपी राज्यों के लिए

- लाभ कमाने वाली ईआईएएस – अर्थात वे ईआईएएस जिनका पिछले वित्तीय वर्ष में एक करोड़ या उससे अधिक का कुल लाभ था – 75 प्रतिशत अनुदान
- अन्य ईआईए के लिए – अर्थात् नुकसान करने वाली ईआईए और ऐसी जिनका पिछले वित्तीय वर्ष में संचित लाभ एक करोड़ से कम रहा है – 90 प्रतिशत अनुदान
- दुग्ध यूनियनों/संघों को और अधिक विकास सक्षम बनाने के लिए – 50 प्रतिशत अनुदान

एनपीडीडी घटक के तहत दी जाने वाली केन्द्रीय सहायता की सीमा इस प्रकार होगीः

- परियोजना के लिए केन्द्रीय सहायता प्रति जिला 15.00 करोड़ रूपये तक सीमित होगी।
- मिल्क पाउडर संयंत्र के लिए प्रति जिला दी जाने वाली केन्द्रीय सहायता प्रति जिला 5 करोड़ रूपये तक सीमित होगी।
- 'तकनीकी निवेश सेवा' के लिए सहायता परियोजना लागत के 15 प्रतिशत तक सीमित होगी।
- केवल अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों को ही पशुधन शामिल करने के लिए सहायता दी जाएगी।
- पशुधन को शामिल करने की अधिकतम लागत परियोजना की कुल लागत के 10 प्रतिशत तक सीमित होगी। इस प्रयोजन के लिए सब्सिडी को गिनने की लागत में पशु धन की लागत, पशु बीमा और परिवहन लागत शामिल होगी।
- कृषिरत महिलाओं को छोड़कर सभी मामलों में पशुधन को शामिल करने की सब्सिडी 50 प्रतिशत तक सीमित होगी। महिला दुग्ध उत्पादकों के मामले में इसके लिए सब्सिडी की अधिकतम सीमा लागत की 75 प्रतिशत तक होगी।
- पुनर्वास सहायता में केन्द्रीय अनुदान की अधिकतम सीमा 5 करोड़ रूपये होगी।

कार्यान्वयन एजेंसियां

एनपीबीबी

- राज्य कार्यान्वयन एजेंसियां एसआईएएस – राज्य पशुधन विकास बोर्ड
- अंतिम कार्यान्वयन एजेंसियां ईआईएएस – राज्य पशुधन विकास बोर्ड – राज्य पशुपालन विभाग, राज्य दुग्ध संघ

कार्यक्रम के वर्ष 2018–19 तक मिलने वाले अनुमानित परिणाम

- किसानों के दरवाजे तक प्रजनन निवेश पहुंचाने के लिए स्वतः टिकाऊ आधार पर 5,000 मैत्रियों (MAITRI) की स्थापना की जाएगी।
- दो मिलियन किसानों की सदस्यता के साथ 36,418 डेरी सहकारी सोसायटियां संगठित की जाएंगी।
- इस कार्यक्रम से प्रतिदिन 2.8 मिलियन लिटर दूध की दुग्ध प्रशीतन क्षमता का और 3.01 मिलियन लिटर दूध की प्रति दिन प्रसंस्करण क्षमता का भी सृजन किया जाएगा।
- इस कार्यक्रम से देश में गोपशुओं और भैंसों में आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करने के लिए किए जाने वाले कार्यों को गति मिलेगी।
- इस कार्यक्रम से प्रजनन को एक आर्थिक गतिविधि के रूप में रूपांतरित करने के लिए नीति – कार्यनीति का फ्रेमवर्क तैयार किया जा सकेगा।

- भाग लेने वाली कार्यान्वयन एजेंसियां पीआईएएस – अन्य एजेंसियां जिनकी बोवाइन विकास में भूमिका हैः सीएफएसपी एंड टी आई, सीसीवीएफएस, भा.कृ.अनु.प., विश्वविद्यालय, कॉलेज, स्वयंसेवी संगठन

एनपीडीडी

- राज्य कार्यान्वयन एजेंसियां एस आई ए एस – आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, झारखंड, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, नागालैंड, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिल नाडु, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए राज्य डेरी संघ और बाकी बचे राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में मिल्क यूनियनें।
- अंतिम कार्यान्वयन एजेंसियां ईआईएएस – जिला मिल्क यूनियन, न्यू जेनरेशन मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनियां (जो कि पिछले वित्तीय वर्ष के 31 मार्च को समाप्त होने वाले एक पूरे वित्तीय वर्ष तक कार्य कर रही हैं– पीपीपी मॉडल पर परियोजनाओं के संबंध में), जिला ग्रामीण विकास प्राधिकरण/ जिला परिषद, जिला मिशन प्रबंधन यूनिटें (उन परियोजनाओं के संबंध में जहां कोई भी जिला डेरी सहकारी यूनियन नहीं है)।
- सहभागी एजेंसियां पीआईएएस – उपरोक्त एसआईएएस या ईआईएएस से संबंद्ध अन्य एजेंसियां जैसे स्वयं सेवा संगठन, स्वयं सहायता समूह, विश्वविद्यालय, कॉलेज, भा. कृ.अनु.प. संस्थान आदि, राष्ट्रीय गोकुल मिशन

राष्ट्रीय गोकुल मिशन

- राज्य कार्यान्वयन एजेंसियां एसआईएएस – राज्य पशुधन विकास बोर्ड
- अंतिम कार्यान्वयन एजेंसियां ईआईएएस – राज्य पशुधन विकास बोर्ड – राज्य पशुपालन विभाग, राज्य दुग्ध संघ, सीएफएसपी एंड टी, सीसीबीएफएस
- भाग लेने वाली कार्यान्वयन एजेंसियां पीआईएएस – अन्य एजेंसियां जिनकी बोवाइन विकास में भूमिका हैः भा.कृ.अनु.प., विश्वविद्यालय, कालेज, स्वयं सेवी संगठन।

स्रोतः पशुपालन, डेरी एवं मात्स्यिकी विभाग, भारत सरकार, कृषि मंत्रालय की वेबसाइटः

www.dahd.nic.in

प्रश्नोत्तरी

दुधारू पशुओं को खुरपका - मुंहपका रोग से बचाएं

डॉ मनोज कुमार
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना
(बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना)

खुरपका-मुंहपका रोग, खुरहा या खुरपका रोग के नाम से भी जाना जाता है। वैज्ञानिक भाषा में इसे फुट एंड माउथ डिजीज (एफएमडी) कहते हैं। यह संक्रामक एवं विनाशकारी पशु रोग है,जो फटे खुर वाले, विभिन्न पालतू पशुओं एवं वन्य जीवों को प्रभावित करता है। यह तेज गति से फैलने वाला गंभीर रोग है, जो कम समय में पशु-समूह एवं आस-पास के गांवों के पशुओं को प्रभावित कर देता है। इस रोग के परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आर्थिक क्षति होती है, जिसमें पशुधन के उत्पादन में कमी मुख्य है। देश के अधिकांश क्षेत्रों में यह रोग व्याप्त है। भारत में खुरपका रोग से लगभग 23 हजार करोड़ रूपये प्रति वर्ष के आर्थिक नुकसान का अनुमान है।

खुरपका – मुंहपका रोग किन पालतू पशुओं को प्रभावित करता है ?

- यह रोग समस्त फटे–खुरवाले पशुओं में पाया जाता है। पालतू पशुओं में गाय, भैंस, बकरी,भेड़, सूअर, ऊंट, याक और मिथुन प्रभावित होते हैं। साथ ही वन्य प्राणी जैसे जिराफ, हिरण, हाथी आदि भी इस रोग से ग्रस्त होते हैं।

खुरपका – मुंहपका रोग का क्या कारण है ?

- यह विषाणु (वायरस) जनित रोग है, जो एफएमडी विषाणु के संक्रमण से उत्पन्न होता है।

इस रोग के विषाणु के स्रोत क्या हैं ?

- प्रभावित पशुओं के स्राव और उत्सर्जन जैसे लार, दूध एवं फफोला का तरल पदार्थ
- विषाणु युक्त संदूषित हवा
- पशुशाला में कार्य करने वाले कृषक या कर्मी के जूते–चप्पल, कपड़े
- संदूषित बर्तन एवं नाद, कृषि उपकरण, गाड़ी के टायर आदि

एक प्रमुख लक्षण - जीभ पर घाव

खुरपका – मुंहपका रोग कैसे फैलता है ?

- खुरहा रोग से प्रभावित पशु के दूध, संदूषित पानी एवं अन्य कृषि उपकरणों के संपर्क से विषाणु स्वस्थ पशुओं में प्रवेश कर बीमारी फैलाते हैं।
- संक्रमित भेड़ और सूकर, खुरपका रोग के विषाणु का अधिक मात्रा में निष्कासन करते हैं एवं इस रोग के प्रसार में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- प्रभावित पशुओं के एक जगह से दूसरी जगह परिवहन से भी विषाणु फैलते हैं।
- रोग मुक्त हुए पशु के अंदर भी छः माह तक विषाणु रहते हैं जो निष्कासित होते रहते हैं। इनके स्राव के संपर्क में आने पर स्वस्थ पशु संक्रमित हो सकते हैं।

रोग के लक्षण क्या हैं ?

- तेज बुखार (102 –105^{0} फारेनहाइट), भूख की कमी एवं अवसाद
- मुंह से अत्यधिक झागदार एवं रेशेदार लार का गिरना, पैर, मुंह और थन पर फफोला उभर आना, बार–बार पैरों को झटकना
- पैरों में फफोले के कारण लंगड़ापन होना
- एक माह या उससे कम आयु वाले बछड़ों का बिना किसी रोग लक्षण के अचानक मृत्यु हो जाना
- दूध उत्पादन में कमी आना

रोग ग्रस्त पशुओं में क्या प्रभाव दिखाई पड़ते हैं ?

- खुर का फटना एवं क्षतिग्रस्त होना जिससे लंगड़ापन आना, थनों में सूजन या थनैला, वजन कम होना।
- गर्भाधान की विफलता, गर्भपात, एक माह से कम आयु के बछड़ों की मृत्यु
- गर्मी के मौसम में अत्यधिक हांफना
- दूध उत्पादन में कमी आना
- शरीर के बालों का सामान्य अधिक बढ़ना एवं मोटा होना
- रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी

खुरपका रोग से बचाव के क्या उपाय हैं ?

- इसकी रोकथाम के लिए टीका श्रेष्ठ एवं लाभकारी साधन है। इसलिए पशुपालकों को अपने सभी पशुओं को (जो चार माह या इससे अधिक आयु के हों) खुरपका रोग का टीका अवश्य लगवाना चाहिए।

खुरपका – मुंहपका से ग्रस्त पशुओं की देखभाल

- मुंह एवं पैर के छालों को 1.0 प्रतिशत लाल पोटाश (पोटैशियम परमैंगनेट) के घोल से धोएं साथ ही तूतिया (कॉपर सल्फेट) का घोल (4 प्रतिशत) पैर के छालों के घावों पर लगाएं ।
- पशु के मुंह के छालों के ऊपर बोरो ग्लिसरीन (एक प्रतिशत) के मिश्रण को लगाने से आराम मिलता है। यह काम तब तक करें, जब तक बीमारी समाप्त नहीं हो जाती।
- स्वस्थ एवं रोगग्रस्त पशुओं को मुंह, जीभ एवं तालू को बेकिंग सोडा के 4 प्रतिशत के घोल से धोएं और पीने के पानी में भी मिलाएं। इससे विषाणु के नष्ट होने में मदद मिलेगी।
- प्रभावित पशुओं को नरम भोजन दें।
- प्रदूषित चारा आदि को नष्ट कर दें। गोबर, मूत्र आदि की सफाई की समुचित व्यवस्था करें।
- प्रभावित एवं उनके संसर्ग में रह रहे पशु के दूध को बछड़ों को नहीं पिलायें।
- संक्रमित पशुओं को पहले चारा दें एवं साफ–सफाई करने के बाद हाथों को 4 % सोडा युक्त पानी से अच्छी तरह धो लें। इसके बाद ही स्वस्थ पशुओं के पास जाएं।
- जहां पशुओं को रखा जाता है, वहां फिनाइल, डिटॉल आदि से समुचित साफ–सफाई करें। दूध के बर्तन एवं पशुपालक स्वयं भी अपने हाथ–पैर की डिटॉल, साबुन आदि से साफ–सफाई करें।
- प्रकोप के दौरान नए पशुओं को शामिल नहीं करें। इसके अलावा संक्रमित क्षेत्र से नये पशुओं को नहीं खरीदना चाहिए।
- स्वस्थ पशु को संक्रमित पशुओं के पास नहीं रखें।

- पहला टीका चार माह की आयु में लगाना चाहिए। पहली बार टीकाकरण के ठीक चार सप्ताह के बाद बूस्टर खुराक देनी चाहिए। इसके बाद प्रत्येक छह माह के अंतराल पर टीके की खुराक अवश्य दिलवाएं।
- टीकाकरण से 15 दिन पूर्व कृमिनाशक अवश्य दें। इससे टीके का प्रभाव उत्तम होगा एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होगी।
- टीकाकरण के बाद पशुओं को पूर्ण आहार देना चाहिए।
- जहां तक संभव हो एक ही समय पर सारे पशुओं का टीकाकरण कराएं, जिससे समूह प्रतिरक्षा विकसित हो सके।
- गर्भवती पशुओं को, जो तीसरी तिमाही के गर्भावस्था को पार कर चुके हों, उनका टीकाकरण नहीं करवाना चाहिए। ऐसे पशुओं का गर्भावस्था के बाद टीकाकरण करवाना चाहिए।
- किसी भी नए पशुओं या मेले से लौटनेवाले मवेशी को कम से कम दो सप्ताह तक अलग रखें और पुराने पशुओं के समूह में सम्मिलित करने से पहले टीकाकरण अवश्य करा दें।
- नवंबर से मार्च के बीच कृषि कार्य में में वृद्धि होने के कारण पशुओं की गतिविधि एवं उस समय के मौसम के अपेक्षाकृत कम तापमान के फलस्वरूप खुरपका रोग के प्रकोप एवं इसकी वृद्धि होने की संभावना रहती है। इसलिए इस समय सघन निगरानी रखना जरूरी होता है।

टीकाकरण का कार्यक्रम

भारत सरकार की ओर से कई राज्यों में खुरपका–मुंहपका रोग को रोकथाम हेतु "खुरपका–मुंहपका रोग नियंत्रण कार्यक्रम" चलाया जा रहा है, जिसमें गाय एवं भैंस प्रजाति के सभी पशुओं को प्रतिवर्ष छः माह के अंतराल पर मुफ्त में टीकाकरण का प्रावधान है। पशुपालक स्थानीय पशुचिकित्सालय से इसकी जानकारी प्राप्त कर पशुओं का टीकाकरण करा सकते हैं।

प्रथम टीकाकरण की न्यूनतम उम्र	टीकाकरण का मार्ग	खुराक	पुनःटीकाकरण का अंतराल
चार माह से अधिक	मांस में	2 मिली.	छह माह

खुरपका – मुंहपका रोग का प्रकोप होने पर बचाव के क्या उपाय करें ?

- खुरपका का प्रभाव होने पर तुरंत स्थानीय पशुचिकित्सक को सूचित करें।
- अपने आस–पास के पशुपालकों को जागरूक करें कि कैसे अपने रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से शीघ्र अलग कर बीमारी को नियंत्रित किया जाए।
- जहां भी खुरपका का प्रकोप है, वहां के पशुओं को चरने या बाहर घूमने नहीं दें। इससे अन्य पशुओं में संक्रमण होने से बचाव होगा।
- जिन स्थानों में खुरपका का प्रकोप हो, वहां के गांव/क्षेत्रों के अप्रभावित पशुओं का परिधीय टीकाकरण (रिंग वैक्सीनेशन) करवाने से रोग के प्रकोप से बचाव एवं इसका फैलाव रोकने में उपयोगी होता है। परिधीय टीकाकरण हमेशा परिधि से संक्रमण के केंद्रबिंदु की दिशा में करना चाहिए।

पहली पहचान फटे खुर

- जिस स्थान पर एफएमडी का प्रकोप हुआ हो, वहां से पशु चारा/पशु आहार नहीं लायें।
- बचाव के लिए पशु परिसर को 4 प्रतिशत सोडा (धुलाई वाला) युक्त पानी से सप्ताह में दो बार धोना चाहिए, इससे विषाणु नष्ट होते हैं ।
- पशुशाला के खाली स्थानों / गलियारों के किनारों पर बिना बुझा चूना पाउडर का छिड़काव किया जाना चाहिए। ■

'दुग्ध सरिता' में विज्ञापन
आमदनी बढ़ाने का उतम साधन

परंपरा

गोधन का अर्थशास्त्र

श्री चेथमल जी गोयनका

किसी भी प्रकार का गोवंश – बूढ़ा, अपंग, अनुत्पादक, लूला, लंगडा और अंधा देश और पालक पर भार स्वरूप नहीं है। उसे अनुपयोगी कहना ठीक नहीं है। भारतीय पुराणों में स्थान-स्थान पर दर्शाया गया है – 'लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमंडला।' अर्थात् गोबर में परम पवित्र सर्वमंगलमयी श्रीलक्ष्मीजी का नित्य निवास है, जिसका अर्थ यही है कि गोबर में सारी धन-संपदा समायी हुई है। इसी विशेषता के कारण गाय को कामधेनु की संज्ञा दी गयी है।

गोबर की खाद धरती का प्राकृतिक आहार है, इससे धरती की उर्वराशक्ति बनी रहती है, यदि गोबर की कम्पोस्ट खाद तैयार करके उपयोग में लाया जाए तो उर्वराशक्ति धीरे–धीरे बढ़ती ही रहती है, घटती नहीं, यही कारण है कि लाखों वर्षों से भारत की उर्वराशक्ति अभी भी बनी हुई है, जबकि विकसित देशों में सिर्फ पिछले 60–70 वर्षों से रासायनिक खाद के उपयोग से लाखों हेक्टेयर भूमि बंजर और अनुत्पादक हो गयी है। वहां की सरकार, वहां के लोग रासायनिक खाद और जहरीली कीटनाशक औषधियों के प्रयोग के घातक परिणामों से अच्छी तरह परिचित हो गये हैं । वे रासायनिक खाद का त्याग कर गोबर की खाद तथा अन्य आर्गेनिक खाद का उपयोग कर रहे हैं। हमारे देश में अभी भी हम रासायनिक खाद के प्रभाव से भ्रमित हो रहे हैं।

गोबर की कम्पोस्ट खाद के विषय में पिछले 10–12 वर्षों से, इसके उपयोग के द्वारा

गोबर से धन

गोबर से गैस मुफ्त में प्राप्त होती है, इसकी जानकारी जन–साधारण को हो चुकी है। गैस का उपयोग ईंधन और रोशनी के लिए किया जाता है। दुर्भाग्य की बात है कि गोबर–गैस के संयंत्र गांव–गांव में लग जाने चाहिए थे, अब तक नहीं लग पाये, यदि ऐसा हुआ होता तो गांवों में ईंधन और रोशनी लोगों को मुफ्त प्राप्त हुई होती। वनों पर ईंधन के लिए जो इतना भार पड़ा है वह समाप्त हो जाता और वन अब तक वापस हरे–भरे हो गये होते। विद्युत प्रणाली पर जो इतना दबाव पड रहा हैं, वह कम होकर उतनी ही विद्युत किसी भी औद्योगिक विकास के काम में लायी गयी होती तो देश की कितनी बड़ी आर्थिक समृद्धि होती। गांव के लोगों को बिना धुएं का स्वच्छ ईंधन मिलता, जिसके कारण उनकी आंखों में बीमारियां उत्पन्न होती है, आंख कमजोर हो जाती है, उससे छुटकारा मिलता। गोबर की कोई लागत नहीं आती, गैस से निकला हुआ गोबर खेती के लिए ज्यादा प्रभावशाली होता है, क्योंकि उसमें से गैस निकल जाने से धरती की उर्वराशक्ति बढाने में वह ज्यादा समर्थ हो जाता है।

बहुत अच्छी तरह प्रमाणित हो चुका है कि यह खाद किसी भी प्रकार से रासायनिक खाद से कम प्रभावशाली नहीं है। इस खाद में रासायनिक खाद की तुलना में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैशियम की मात्रा कम नहीं है। नाइट्रोजन 0.5 – 1.5 प्रतिशत, फास्फोरस 0.4–0.9 प्रतिशत और पोटैशियम 1.2–1.4 प्रतिशत रहता है। अनुपात गोबर की कम्पोस्ट खाद को कई बार प्रसिद्ध शोधशालाओं में शोध कराकर जांच लिया गया है। इस कम्पोस्ट खाद के बनाने की विधि को नॅडेप खाद के नाम से जाना जाता है। इस खाद को बनाने की विधि भी है, जो बहुत ही सरल है। प्रत्येक किसान और गोपालक अपने ही घर पर अथवा खेत में, इसे बना सकता है।

सिवाय परिश्रम के इसमें कोई लागत नहीं आती है। इस खाद को बनाने के लिए 10 फुट लंबा, 6 फुट चौड़ा और 3 फुट ऊंचा एक हौद बनाना होता है, जिसमें 180 घनफुट गोबर की कम्पोस्ट खाद तैयार होती है। एक टंकी भरने के लिए सिर्फ 100 किलोग्राम गोबर, लगभग 1500 किलोग्राम खेत के तथा अन्य वानस्पतिक व्यर्थ पदार्थ जैसे सूखे पत्ते, डंठल, टहनियां, जड़ें आदि एवं खेत के हरे झाड़–झांखर, खेती की या नाले की सूखी, छनी हुई मिट्टी 1750 किलोग्राम तथा पानी लगभग 1500–2000 लीटर मौसम के अनुसार आवश्यकता होती है। इन पदार्थों की कोई भी लागत नहीं आती, यह सब किसान को खेती में ही और पशुओं से उपलब्ध हो जाता है।

इस मिश्रण को गोबर, मिट्टी से लेप कर हौद को बंद कर दिया जाता है। 90–120 दिन तक सामग्री उसी टंकी में पड़ी रहती है और कम्पोस्ट खाद तैयार हो जाती है। खाद से तैयार होने पर उसे उपयुक्त छलनी से छाना जाता है, उसका वजन लगभग तीन टन होता है। 100 किलोग्राम गोबर से तीन टन गोबर की कम्पोस्ट खाद तैयार होती है। आज के वर्तमान भावों के अनुसार एक बोरी यूरिया खाद 50 किलो की कीमत लगभग ढाई सौ रूपये से अधिक है। एक गाय के वार्षिक गोबर से लगभग 80 टन खाद एक वर्ष में तैयार हो सकती है, जिसकी कीमत आज के रासायनिक खाद के भाव अनुसार लगभग 40 हजार रूपये की होती है। एक गाय से मासिक आय सिर्फ उसके गोबर से लगभग 3300 रूपये की हो सकती है।

गोमूत्र खेती के लिए बहुत उपयोगी होता है, उसमें धरती को बिना किसी प्रकार की हानि पहुंचाये बहुत अच्छी कीटाणुनाशक शक्ति होती है। गोमूत्र का उपयोग मानव की कई बीमारियों में औषध के रूप में और पेट के कृमिनाश के लिए किया जाता है।

साभारः 'कल्याण पत्रिका', गोसेवा अंक (1995), गीता प्रेस, गोरखपुर

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

इंडियन डेरी एसोसिएशन का प्रकाशन

दुग्ध सरिता

(द्विमासिक पत्रिका)

अंकों की संख्या : 6

वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–

कीमत रु. 75/– प्रति अंक

साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :

दुग्ध सरिता विवरण.../एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या [ ]

(कृपया 'टिक' करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम...

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए)...

पता...

शहर...

राज्य...............................पिन कोड...............................ई–मेल...............................

फोन...मोबाइल...............................

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं...

बैंक...इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी...............................तारीख...............................राशि...............................)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।

सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indairyasso.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **SYNB0009009**

बैंक : सिंडिकेट बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

सफलता गाथा

गृहिणी से डेरी उद्यमी बनीं नीतू यादव

प्रस्तुतिः आईडीए, नॉर्थ जो़न

श्रीमती नीतू यादव का जन्म 23 मार्च, 1978 को हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के गुडा गांव के एक किसान परिवार में हुआ था। श्रीमती नीतू ने अपनी 12वीं क्लास की शिक्षा पूरी करने के बाद आईटीआई की योग्यता भी हासिल की। बचपन से ही श्रीमती नीतू को पशुओं की सेवा करने में बड़ा आनंद आता था। शादी के बाद अपने इसी सपने को पूरा करने के लिये और स्व-उद्यमी बनने की लालसा में उन्होंने पशुपालन शुरू करने की चुनौती उठाई, जिसे अब नीतू डेरी फार्म कहा जाता है।

नीतू यादव ने वर्ष 2008 में केवल छह दुधारू जानवरों के साथ काम शुरू किया। कम रिटर्न और उच्च व्यय के साथ यह एक बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन वह अपने दृढ़ विश्वास, हौसले और अथक परिश्रम से लगातार आगे बढ़ती रहीं। वर्तमान में श्रीमती नीतू यादव नें अपने दूध व्यवसाय को बुलंदियों तक पहुंचा दिया है। अपनी इस यात्रा के दौरान उन्होंने समय–समय पर अपने ज्ञान को उन्नत करने के लिए विभिन्न सेमिनारों और कार्यशालाओं में भी भाग लिया। वह एक गृहिणी तथा एक आत्मविश्वासी उद्यमी की बहुत अच्छी मिसाल हैं। तकनीकी रूप से, उन्होंने डेरी फार्म के अपने वैज्ञानिक ज्ञान को उन्नत किया है।

उपलब्धियां

आज नीतू यादव 150 पशुओं की देखरेख करती हुई प्रतिदिन 1400 लिटर दूध का उत्पादन कर रही हैं। श्रीमती यादव हरियाणा में आयोजित पशुमेला एवं कृषि विज्ञान केन्द्र पर आयोजित अनेक कार्यक्रमों में शामिल हो चुकी हैं। जिला में आयोजित कृषि ज्ञान–विज्ञान कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि जुड़कर वह महिलाओं को पशुपालन से जुड़ने के लिए जागरूक भी करती हैं। इसके साथ श्रीमती यादव महिला जागरूकता कार्यक्रम के तहत अनेक गांवों का दौरा कर चुकी हैं। आज श्रीमती यादव ग्रामीण महिलाओं को जागरूक करने के लिए एवं पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए कृषि ज्ञान–विज्ञान की तरफ से किसान न्यूज चैनल पर भी आयोजित कार्यक्रम में शामिल हो चुकी हैं।

दिनांक 28 अक्तूबर, 2017 को झज्जर जिला में ऑल हरियाणा पशुमेला आयोजित किया गया था। इसमें श्रीमती यादव की श्रीदेवी नामक गाय ने संपूर्ण हरियाणा में प्रथम स्थान प्राप्त कर रु.31000/– का इनाम जीता एवं दारासिंह नामक बुल ने दूसरा स्थान प्राप्त कर रु.5100/– का इनाम जीता था।

हरियाणा राज्य में एक महिला के रूप में डेरी क्षेत्र में शीर्ष दूध की उत्पादन के लिए हरियाणा कृषि मंत्री श्री ओ.पी.धनखड़ जी द्वारा उन्हें जनवरी 2017 में सम्मानित किया गया था। हाल ही में फरवरी, 2018 में आयोजित 46वी डेरी इंडस्ट्री कान्फ्रेंस, कोच्चि में श्रीमती नीतू यादव को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ डेरी महिला (उत्तर भारत) पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डेरी के काम को खुद संभालती हैं

श्रीमती यादव मेहसाणा संघ के साथ सन् 2015 से जुडी हुई हैं। यहां से उनको अपने दूध का उचित मूल्य और समय पर भुगतान मिलता है, जिसकी वजह से उन्होंने पिछले 3–4 वर्षों में अपने पशुओं की संख्या में इजाफा किया है और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया है। श्रीमती यादव मेहसाणा संघ द्वारा आयोजित किसान जागरूकता कार्यक्रम में भी भाग लेती हैं और किसानों को पशुओं के रखरखाव एवं इस व्यवसाय को अपनाने को प्रेरित भी करती हैं।

श्रीमती नीतू यादव अपनी इस सफलता का श्रेय अपने परिवार का सहयोग व दूधसागर नेशनल, हरियाणा (मेहसाणा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ) को देती हैं। ■

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

प्रबंधन

दुधारू पशु मद में ना आएं तो क्या करें

नितिन रहेजा एवं निशान्त कुमार
पशु प्रजनन, स्त्री रोग एवं प्रसूति विभाग
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल–132001 (हरियाणा)

दुधारू पशुओं की मद में ना आने की समस्या पशुपालकों के लिए बहुत बड़े आर्थिक नुकसान का कारण बनती है। ये समस्या मुख्यतः ओसर (हीफर) अवस्था में और प्रसव के उपरान्त पाई जाती है। दुधारू गायों में ब्यांत अंतराल 12-13 माह का होना चाहिए। इस ब्यांत अंतराल को कायम रखने के लिए गाय को ब्याने के बाद 60 दिनों के मध्यांतर मद में आ जाना चाहिए और 100 दिनों के अन्दर गाभिन हो जाना चाहिए। यदि गाय ब्याने के 60 दिनों के बाद भी मद में नहीं आती है तो तुरन्त एक योग्य पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए और वह सब उपाय करने चाहिए जिससे कि पशु जल्द से जल्द मद में आ जाये।

मद में ना आने की समस्या अधिकतर ग्रीष्म ऋतु में तथा ब्याने के बाद देखी जाती है। इस परिस्थिति में पशु यौन गतिविधियों में असक्रिय होता है जो पशु के मद में ना आने को दर्शाता है। इस समस्या के उत्पन्न होने के कई कारण हैं, जैसे कुपोषण, हॉरमोनल असंतुलन, जननांगों में जन्मजात असामान्यता, अप्रत्यक्ष मद, मौन मद, ऊष्मागत तनाव, खनिज पदार्थ एवं विटामिन की कमी, जननांगों का संक्रमण आदि।

बेहतर देखरेख से मद में नियमितता

मद में ना आने की समस्या का निदान तथा निवारण

इस समस्या का निदान पशु की शारीरिक जांच, रक्त के नमूनों में हॉरमोन की जांच एवं पशुचिकित्सक द्वारा मलाशय जांच करवा कर की जा सकती है। अप्रत्यक्ष मद के निदान के लिए दुधारू पशुओं को कम से कम प्रतिदिन तीन बार मद के लक्षणों के लिए जांच करनी चाहिये।

- कई बछियों में मलाशय जांच के दौरान यह पता चलता है कि उनमें जन्म से ही अंडाशय मौजूद नहीं है या बहुत ही छोटा अंडाशय मौजूद है। यह एक जन्मजात विकार है, ऐसे पशुओं का इलाज संभव नहीं है। ऐसे पशु की छंटनी कर देना उनका सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन है।
- कई परिस्थितियों में देखा गया है कि जब गाय में जुड़वां बछड़े पैदा होते हैं और अगर उनमें एक नर बछड़ा और दूसरी मादा बछड़ी होती है तो ऐसी स्थिति में मादा बछड़ी 92–95 प्रतिशत मामलों में बांझ होती है। ऐसे मादा पशु को फ्रीमार्टिन पशु कहते है। फ्रीमार्टिन पशु में अंडाशय एवं जननांग अनुपस्थित अथवा बेहद अपरिपक्व होते हैं, योनि का कुछ भाग मूत्रमार्ग के मुंह तक मौजूद होता है और केवल योनि द्वार की सामान्य स्थिति होती है। इस रोग से ग्रस्त पशु कभी भी मद में नहीं आते, उनका भग–शिश्न (क्लाइटोरिस) बाहर निकला हुआ एवं योनि द्वार पर बाल के लंबे गुच्छे होते है। फ्रीमार्टिन पशु का कोई इलाज नहीं है, इसलिए ऐसे पशु को समूह से छांट देना चाहिये।
- कई परिस्थितियों में पशु यौन परिपक्वता की उम्र ग्रहण करने के बाद भी यौन गतिविधियों में असक्रिय होता है, जो पशु के मद में ना आने को दर्शाता है। पशुचिकित्सक द्वारा मलाशय परीक्षा में अंडाशय में ना तो पुटक (फॉलिकिल) का एहसास होता है और ना ही पितपिंड (कॉर्पसल्यूटियम) का, ऐसी अवस्था को सच्ची अमद्कालीय स्थिति (ट्रू एनेस्ट्रस) कहा जाता है। ऐसी स्थिति

मद का समुचित प्रबंध, नियमित दूध उत्पादन

में मलाशय जांच के दौरान छोटे एवं निष्क्रिय अंडाशय मिलते हैं। इस समस्या के उत्पन्न होने का प्रमुख कारण कुपोषण होता है। प्रजनन के लिए सही मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज पदार्थ, विटामिन एवं पानी की आवश्यकता होती है। इनमें से किसी भी अवयव के अभाव से सच्ची अमद्कालीय स्थिति उत्पन हो सकती है। ऐसे पशुओं के मद में आने के लिए इनके आहार को संतुलित करना बेहद आवश्यक है। पशु को सबसे पहले पेट के कीड़ों की या कृमिनाशक दवा देनी चाहिए। पशु को रोज संतुलित आहार, जिसमें दाने तथा हरे चारे की भरपूर खुराक हो, तथा 50 ग्राम खनिज लवण मिश्रण देना चाहिए। देखा गया है कि लगभग दो महीने के अन्दर इस प्रबंधन से 70–80 प्रतिशत पशु मद में आ जाते है।

- कई भैंसें सुप्त प्रजनक होती हैं। मदकाल में रहने के बावजूद इनमें मदकाल या गर्मी के लक्षण स्पष्ट रूप से प्रदर्शित नहीं होते हैं। भैसों की इस अवस्था को सुप्त मदकाल या चुप्पा गर्मी कहा जाता है। भैंस के सही मदकाल का पता लगाने के लिए बधिया भैंसा सांड को हर चार घंटे में घुमाना चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में उन्हें दो बार नहलाना चाहिए और उनके शरीर पर 3–4 बार पानी का छिड़काव करना चाहिए। उन्हें लू से बचाना चाहिए तथा ठंडे स्थान पर बांधना चाहिए।
- पशु को मद की स्थिति में सही समय पर ना पहचानने की वजह से एवं कभी–कभी मद रहित पशु को कृत्रिम गर्भाधान करने की वजह से पशु गाभिन नहीं हो पाता है। इसलिए दुधारू पशुओं को विशेषज्ञ कर्मियों के द्वारा कम से कम प्रतिदिन तीन बार (8 घंटो के अंतराल पर) मद के लक्षणों के लिए जांचना चाहिये एवं सही समय पर ही प्रजनन कराना चाहिए।
- सभी पशुपालकों को यह हमेशा सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी बछिया की शारीरिक वजन वृद्धि 400–500 ग्राम प्रतिदिन हो, ऐसी बछिया हमेशा स्वस्थ रहती है और सही समय पर मद के लक्षण प्रदर्शित करती है।
- पशुपालक को अपने पशु की समय–समय पर एक योग्य पशु चिकित्सक से जांच कराते रहना चाहिए तथा परामर्श लेते रहना चाहिए।

अगर पशुपालक ऊपर बताये गए सभी निर्देशों का पूरी निष्ठा से पालन करें तो अपने दुधारू पशु के मद में ना आने की समस्या का समाधान कर सकता है। ■

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाए

RATE CARD — DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion Rs.	Inaugural Offer Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000

* Fifth colour: extra charges will be levied.

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — **Height :** 26.5 cm; **Width:** 20.5 cm
Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: **ida.adv@gmail.com** in PDF & JPG **OR** CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: ***Name:*** *Indian Dairy Association;* ***SB a/c No:*** *90562170000024;* ***IFSC:*** *SYNB0009009;* ***Bank:*** *Syndicate Bank;* ***Branch Address:*** *Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.*

Contact for Ads
Mr. Narendra Kumar Pandey
Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association

IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022
Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237 Fax: 91-11-26174719
E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indairyasso.org

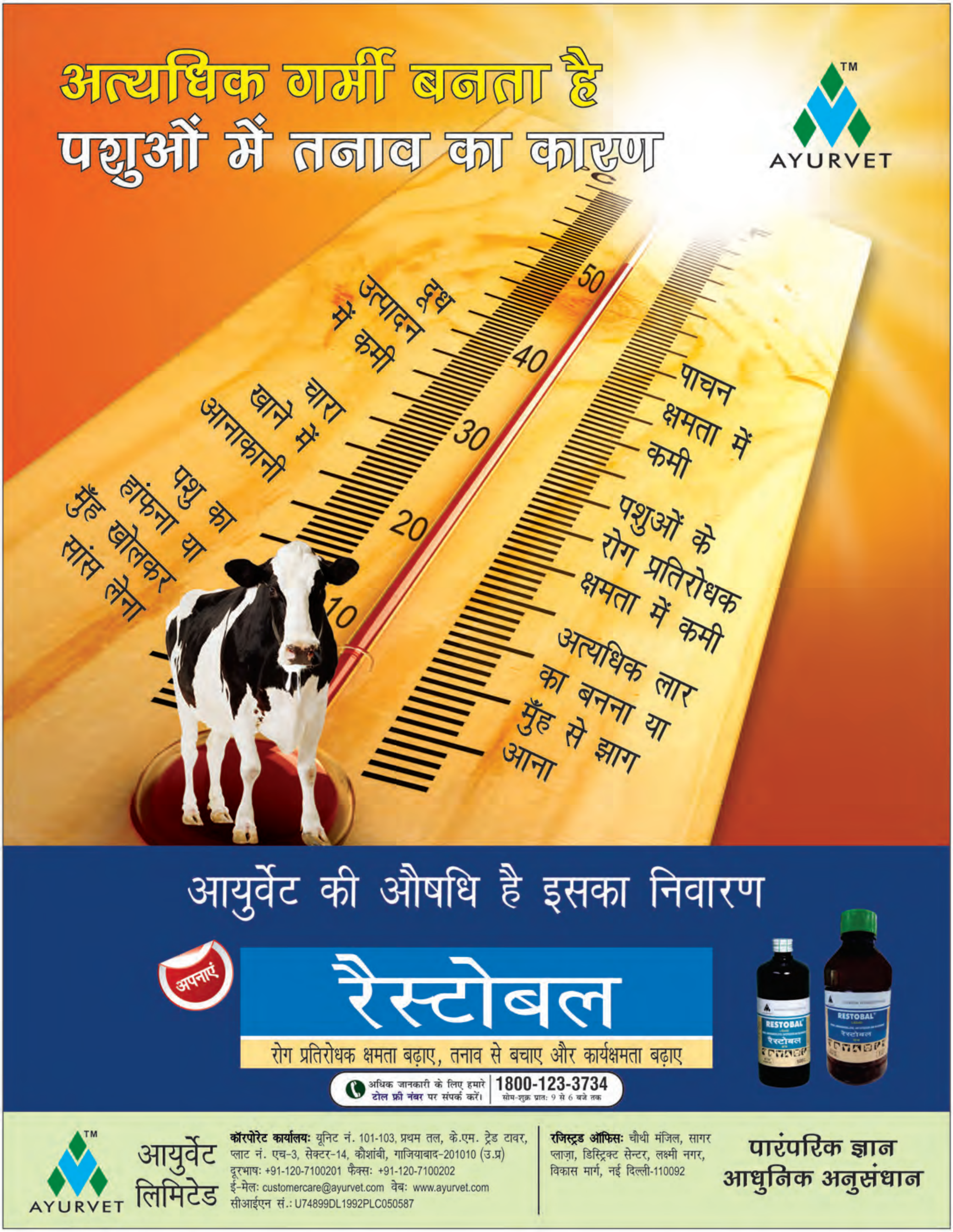
अत्यधिक गर्मी बनता है
पशुओं में तनाव का कारण
AYURVET
दूध उत्पादन में कमी
चारा खाने में आनाकानी
पशु का हांफना या मुँह खोलकर सांस लेना
पाचन क्षमता में कमी
पशुओं के रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी
अत्यधिक लार का बनना या मुँह से झाग आना
10
20
30
40
50
आयुर्वेट की औषधि है इसका निवारण
अपनाएं
रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए
अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर पर संपर्क करें। 1800-123-3734
सोम-शुक्र प्रात: 9 से 6 बजे तक
RESTOBAL
रैस्टोबल
AYURVET
आयुर्वेट लिमिटेड
कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587
रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092
पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान

RNI No.: DELHIN/2017/74023

प्रकाशक व मुद्रक नरेश कुमार भनोट द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट, ए–89 / 1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन, आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना